रजिस्ट्री सं. डी.--(डी. एन.)--73

REGISTERED NO. D - (DN)--73

भारत का राजपत्र
The Gazette of India

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 12] नई दिल्ली, शनिवार, मार्च 22, 1986 (चैत्र 1, 1908)

No. 12] NEW DELHI, SATURDAY, MARCH 22, 1986 (CHIATRA 1, 1908)

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके।

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation)

विषय सूची

	पृष्ठ
भाग I--खण्ड-1--भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए संकल्पों और असांविधिक आदेशों के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं . .	251
भाग I--खण्ड-2--भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) द्वारा जारी की गई सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों आदि के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं	339
भाग I--खण्ड 3--रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गये संकल्पों और असांविधिक आदेशों के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं	—
भाग I--खण्ड 4--रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों आदि के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं	341
भाग II--खण्ड 1--अधिनियम, अध्यादेश और विनियम	*
भाग II--खण्ड 1क--अधिनियमों, अध्यादेशों और विनियमों का हिन्दी भाषा में प्राधिकृत पाठ . .	*
भाग II--खण्ड 2--विधेयक तथा विधेयकों पर प्रवर समितियों के बिल तथा रिपोर्ट . .	*
भाग II--खंड 3--उप-खंड (i)--भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियम (जिनमें सामान्य स्वरूप के आदेश और उपविधियां आदि भी शामिल हैं)	*
भाग II--खण्ड 3--उप-खण्ड (ii)--भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सांविधिक आदेश और अधिसूचनाएं	*
भाग II--खण्ड 3--उप-खंड (iii)--भारत सरकार के मंत्रालयों (जिनमें रक्षा मंत्रालय भी शामिल है) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियमों और सांविधिक आदेशों (जिनमें सामान्य स्वरूप की उपविधियां भी शामिल हैं) के हिन्दी में प्राधिकृत पाठ (ऐसे पाठों को छोड़कर जो भारत के राजपत्र के खण्ड 3 या खण्ड 4 में प्रकाशित होते हैं) . . .	*
भाग II--खंड 4--रक्षा मंत्रालय द्वारा किए गए सांविधिक नियम और आदेश . . .	*
भाग III--खंड 1--उच्चतम न्यायालय, महालेखा परीक्षक, संघ लोक सेवा आयोग, रेलवे प्रशासनों, उच्च न्यायालयों और भारत सरकार के संबद्ध और अधीनस्थ कार्यालयों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं . .	10783
भाग III--खंड 2--पेटेन्ट कार्यालय, कलकत्ता द्वारा जारी की गयी अधिसूचनाएं और नोटिस . .	205
भाग III--खण्ड 3--मुख्य आयुक्तों के प्राधिकार के अधीन अथवा द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं .	—
भाग III--खण्ड 4--विविध अधिसूचनाएं जिनमें सांविधिक निकायों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं, आदेश, विज्ञापन और नोटिस शामिल हैं . .	265
भाग IV--गैर-सरकारी व्यक्ति और गैर-सरकारी निकायों द्वारा विज्ञापन और नोटिस . .	47
भाग V--अंग्रेजी और हिन्दी दोनों में जन्म और मृत्यु के आंकड़े को दिखाने वाला अनुपूरक	*

*पृष्ठ संख्या प्राप्त नहीं हुई ।

CONTENTS

	PAGE
PART I—SECTION 1—Notifications relating to Resolutions and Non-Statutory Orders issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) ..	251
PART I—SECTION 2—Notifications regarding Appointments, Promotions, etc. of Government Officers issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence)	339
PART I—SECTION 3—Notifications relating to Resolutions and Non-Statutory Orders issued by the Ministry of Defence	—
PART I—SECTION 4—Notification regarding Appointments, Promotions, etc. of Government Officers issued by the Ministry of Defence	341
PART II—SECTION 1—Acts, Ordinances and Regulations	*
PART II—SECTION 1-A—Authoritative text in the Hindi Language of Acts, Ordinances and Regulations	
PART II—SECTION 2—Bills and Reports of the Select Committee on Bills	*
PART II—SECTION 3—SUB-SEC. (i)—General Statutory Rules (including orders, by-laws, etc. of a general character) issued by the Ministries of the Government of India, (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administration of Union Territories) ..	*
PART II—SECTION 3—SUB-SEC. (ii)—Statutory Orders and Notifications issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administration of Union Territories)	*
PART II—SECTION 3—SUB-SEC. (iii)—Authoritative texts in Hindi (other than such texts published in Section 3 or Section 4 of the Gazette of India) of General Statutory Rules & Statutory Orders (including bye-laws of a general character) issued by the Ministries of the Government of India (including the Ministry of Defence) and by General Authorities (other than Administrations of Union Territories)	*
PART II—SECTION 4—Statutory Rules and Orders issued by the Ministry of Defence ..	*
PART III—SECTION 1—Notifications issued by the Supreme Court, Auditor General, Union Public Service Commission, Railways Administrations. High Courts and the Attached and Subordinate Offices of the Government of India	10783
PART III—SECTION 2—Notifications and Notices issued by the Patent Office, Calcutta ..	205
PART III—SECTION 3—Notifications issued by or under the authority of Chief Commissioners	—
PART III—SECTION 4—Miscellaneous Notifications including Notifications, Orders, Advertisements and Notices issued by Statutory Bodies	265
PART IV—Advertisements and Notices by Private Individuals and Private Bodies	47
PART V—Supplement showing statistics of Birth and Deaths etc. both in English and Hindi ..	*

*Folio Nos. not received

भाग I—खण्ड 1

[PART I—SECTION 1]

(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से संबंधित अधिसूचनाएं

[Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and the Supreme Court]

राष्ट्रपति सचिवालय

नई दिल्ली, दिनांक 6 मार्च, 1986

सं० 23-प्रेज/86—राष्ट्रपति उत्तर प्रदेश पुलिस के निम्नांकित अधिकारी को उसकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारी का नाम तथा पद

श्री जयकरण सिंह,
पुलिस उप निरीक्षक,
इटावा (उत्तर प्रदेश)।

सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया।

27 फरवरी, 1983, को गांव बेला की घाटियों में एक अपहृत बच्चे के साथ डाकू बाबू के गिरोह की उपस्थिति के बारे में सूचना प्राप्त हुई। श्री जयकरण सिंह, पुलिस उप निरीक्षक, ने 3 अन्य उप निरीक्षकों, पी० ए० सी० के एक कम्पनी कमांडर, 8 कांस्टेबलों और पी० ए० सी० के जवानों के $1\frac{1}{2}$ सेक्शन के समिति बल के साथ गिरोह को गिरफ्तार करने का निर्णय किया। उन्होंने अलग-अलग तीन दिशाओं से घेरने के लिए बल को तीन दलों में बांट दिया। वे पहले दल के प्रभारी थे। इस दल को मुखबिर उस स्थान पर ले गया, जहां गिरोह विश्राम कर रहा था। श्री जयकरण सिंह रेंगकर गये और उन्होंने देखा कि गिरोह नीचे भूमि पर विश्राम कर रहा है। उन्होंने चुपके से अपने दल को एकत्र किया और खुद एक ऊंचे टीले पर मोर्चा लगाया जहां से वे गिरोह को देख सकते थे। उन्होंने गिरोह को पुलिस के सामने आत्मसमर्पण करने की चेतावनी दी। इसके विपरीत डाकुओं ने उनकी ओर गोलियां चलाईं लेकिन गोलियां उनके नहीं लगीं और वे बच गए। वे तुरन्त टीले की चोटी पर चढ़ गए और डाकुओं पर गोली चलाई। पुलिस दल और डाकुओं के बीच मुश्किल से 35 गज की दूरी थी। श्री जयकरण सिंह ने अन्य पुलिस दलों को भी संकेत दिया। दूसरे दल के नेता ने संकेत पर कार्रवाई की और उत्तर की ओर से गिरोह पर गोली चलानी शुरू कर दी जबकि पहले दल ने पूर्ण और उत्तर पूर्व की ओर से उन्हें घेरे रखा। तीसरे दल ने पश्चिम की ओर से गिरोह पर गोली चलाई। पुलिस दलों और डाकुओं के गिरोह के बीच भीषण रूप से गोली चलाई गई। $1\frac{1}{2}$ घण्टे लगातार गोलाबारी हुई। सवेरे और अधिक प्रकाश हो गया था। पुलिस दल को एक नाले से चीखें सुनाई दीं। यह अपहृत बच्चा था जो पुलिस दल को गोलाबारी रोकने के लिए चिल्ला कर कह रहा था क्योंकि गिरोह के सभी 7 सदस्यों को गोलियां लग चुकी थीं और मारे गए थे। इस प्रकार बाबू डाकू का समस्त गिरोह समाप्त हो गया था। अपहृत बच्चे को भी पुलिस ने बचा लिया। घटना-स्थल से कारखाने में बनी तीन बन्दूकें, .315 बोर की तीन राइफलें और एक सी० एम०, .12 बोर गन तथा 75 चले हुए कारतूस और 20 रौंद बरामद किए गए।

इस मुठभेड़ में, श्री जयकरण सिंह, पुलिस उप निरीक्षक, ने उत्कृष्ट वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पदक पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(1) के अन्तर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अन्तर्गत विशेष स्वीकृत भत्ता भी दिनांक 27 फरवरी 1983 से दिया जाएगा।

सं० 24-प्रेज/86—राष्ट्रपति तमिल नाडु पुलिस के निम्नांकित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारियों के नाम तथा पद

श्री वाल्टर इसाक् देवाराम,
पुलिस उप महा-निरीक्षक।

श्री आर० एन० पुरुषोत्तमन,
पुलिस निरीक्षक।

श्री के० एन० सुधाकरण,
पुलिस उप निरीक्षक।

श्री एस० पन्नीरसेल्वम,
पुलिस उप निरीक्षक।

श्री अशोक कुमार,
पुलिस उप निरीक्षक।

सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया।

23 अगस्त, 1981 को सूचना मिली कि असामाजिक तत्वों का एक सशस्त्र गिरोह जो विभिन्न अपराधों के लिए जिम्मेदार था, उत्तरी आर्कोट जिले के नायकनेरी की पहाड़ियों में देखा गया है। श्री वाल्टर इसाक् देवाराम, पुलिस उप-महानिरीक्षक एक पुलिस दल के साथ जिसमें एक निरीक्षक, तीन उप निरीक्षक, छः कान्स्टेबल तथा 2 लांस नायक थे, घटना स्थल की ओर रवाना हुए। जब पुलिस की जीपें अम्बूर से 23.5 कि० मी० दूर थीं, श्री देवाराम ने देखा कि सड़क बड़े-बड़े पत्थर रख कर बन्द की गयी है। उन्हें गड़बड़ी का अन्देशा हुआ और उन्होंने जीप में सवार जवानों को नीचे कूदने और आड़ में होने का आदेश दिया। जैसे ही, पुलिस दल रुका, आगे वाली जीप पर गोलियों की भारी बौछार होने लगी। रात के घोर अंधेरे के कारण गिरोह की स्थिति और संख्या का अन्दाजा लगाना सम्भव नहीं था। फिर भी, आक्रमणकारियों की बन्दूकों से चली गोलियों की चमक का लाभ उठाते हुए, उन्होंने मोटे तौर पर स्थिति का जायजा लिया और निरीक्षक आर० एन० पुरुषोत्तमन तथा उप-निरीक्षक एस० पन्नीरसेल्वम तथा के० एन० सुधाकरन को मोर्चा सम्भालने और आक्रमणकारियों पर गोली चलाते रहने का निदेश दिया ताकि वे बचकर घात के स्थान के बायीं ओर न भाग सकें। उन्होंने स्वयं दायें किनारे पर स्थिति सम्भाली, उनके पीछे उप-निरीक्षक अशोक कुमार थे। गोली चलाने के अतिरिक्त, आक्रमणकारियों ने पत्थरों से खड़ी की गयी रुकावट के पीछे से देसी बम भी फैंके। बन्दूकों की लड़ाई लगभग आधे घण्टे तक चली। परन्तु आक्रमणकारी गोली-बारी के दौरान तीन मृत साथियों को छोड़कर भाग गए। पुलिस दल एक विदेशी अर्द्ध स्वचालित पिस्तौल, एक एस० बी० बी० एल० बन्दूक तथा एक एस० बी० एम० एल० बन्दूक, दो अन्य बन्दूकें, बहुत से खाली खोल, काफी मात्रा में बारूद तथा कारतूस अपने कब्जे में लेने में सफल हुआ।

इस मुठभेड़ में, श्री वाल्टर इसाक् देवाराम, पुलिस उपमहा-निरीक्षक श्री आर० एन० पुरुषोत्तमन, पुलिस निरीक्षक, श्री के० एन० सुधाकरण, उप-निरीक्षक, श्री एस० पन्नीरसेल्वम, उप निरीक्षक तथा श्री अशोक कुमार, उप निरीक्षक ने उत्कृष्ट वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्य परायणता का परिचय दिया।

ये पदक पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(1) के अन्तर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम 5 के अन्तर्गत विशेष स्वीकृत भत्ता भी दिनांक 23 अगस्त, 1981 से दिया जाएगा।

दिनांक 26 जनवरी 1986

सं० 25 प्रेज/86 - राष्ट्रपति निम्नांकित व्यक्तियों को उनकी अति असाधारण विशिष्ट सेवा के उपलक्ष्य में "परम विशिष्ट सेवा मैडल" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :-

1. लेफ्टिनेंट जनरल अशोक कुमार हांडू (आई० सी०-4502), इन्फेन्ट्री
2. लेफ्टिनेंट जनरल कुलभूषण मेहता (आई० सी०-4509), इन्फेन्ट्री
3. लेफ्टिनेंट जनरल प्रेम नाथ हूण (आई० सी०-4591), अ० वि० से० मे०, से० मे०, इन्फेन्ट्री
4. लेफ्टिनेंट जनरल परमूल इरशा मेनन (आई० सी०-4831), आर्टिलरी
5. लेफ्टिनेंट जनरल जगेश्वर नाथ सिंह (आई० सी०-4518), आर्मी सर्विस कोर
6. लेफ्टिनेंट जनरल सुशील कुमार (आई० सी०-4012), विद्युत एवं यांत्रिक इंजीनियर्स
7. लेफ्टिनेंट जनरल रत्न कुमार धवन (आई० सी०-3968), इंजीनियर्स
8. लेफ्टिनेंट जनरल जितन्दर सूद (आई० सी०-4116), आर्टीलरी
9. लेफ्टिनेंट जनरल विश्व नाथ शर्मा (आई० सी०-4769), अ० वि० से० मे०, कवचित कोर
10. लेफ्टिनेंट जनरल भारत भूषण सहगल (आई० सी०-5304), इन्फेन्ट्री
11. वाइस एडमिरल गुलाब मोहनलाल हीरानन्दानी, अ० वि० से० मे०, नौ० से० मे० (00123आर)
12. वाइस एडमिरल सुशरूप जैन अ० वि० से० मे०, नौ से० मे० (00130 डब्ल्यू)
13. वाइस एडमिरल लक्ष्मीपत राय मेहता, अ० वि० से० मे० (50011 के)
14. एयर मार्शल प्रद्युम्न मोहन्ती, अ० वि० से० मे० (3867) उड़ान (पायलट)
15. एयर मार्शल वीर नारायण (4007), उड़ान (नेविगेटर)
16. एयर मार्शल मन मोहन सिंह, अ० वि० से० मे०, वीर चक्र (4023), उड़ान (पायलट)
17. एयर मार्शल कुलदीप सिंह भाटिया, अ० वि० से० मे० और बार (4139) वैमानिक इंजीनियर (इलेक्ट्रोनिक्स)
18. मेजर जनरल कृष्ण कुमार सूदन (आई० सी०-5144), आर्टिलरी
19. मेजर जनरल करतार सिंह गिल (आई० सी०-5956), आर्टिलरी
20. मेजर जनरल एंथनी कॉर्नेलियस डिमल्वा (आई० सी०-5993), आर्टिलरी
21. मेजर जनरल शिव कुमार शर्मा (आई० सी०-6416), इन्फेन्ट्री
22. मेजर जनरल बचित्तर सिंह (आई० सी०-5113), इन्फेन्ट्री
23. मेजर जनरल योगेन्द्र सिंह तोमर (आई० सी०-6615), इन्फेन्ट्री
24. मेजर जनरल सत्यपाल सेठी (आई० सी० 5321), अ० वि० से० मे०, सिगनल्स
25. मेजर जनरल विजय कुमार सूद (आई० सी०-6636), अ० वि० से० मे०, इन्फेन्ट्री
26. मेजर जनरल प्रभाकर काशीनाथ जांगलेकर (आई० सी०-5343) सिगनल्स
27. मेजर जनरल सुरिन्दर कुमार (आई० सी०-6631), सेना सेवा कोर,
28. मेजर जनरल हरभजन सिंह (एम० आर०-783), सेना चिकित्सा कोर
29. एयर वाइस मार्शल छोटे लाल गुप्ता (5027), लेखा

सं० 26-प्रेज/86 - राष्ट्रपति निम्नांकित व्यक्तियों को उनकी असाधारण विशिष्ट सेवा के उपलक्ष्य में "अति विशिष्ट सेवा मैडल" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :-

1. मेजर जनरल श्री प्रकाशमणि त्रिपाठी (आई० सी० 7 19), कवचित कोर
2. मेजर जनरल नागप्पा सुब्बा राव (आई० सी०-7240), विद्युत एवं यांत्रिक इंजीनियर्स
3. मेजर जनरल मनमोहन राय (आई० सी०-6114), इंजीनियरी
4. मेजर जनरल कन्हैया लाल मणिशंकर उपाध्याय (आई० सी०-6019), सिगनल्स
5. मेजर जनरल सुरिन्दर कुमार आनन्द (टी० सी०-312 2), ए० पी० एस० सी०
6. मेजर जनरल माधवन नायर केशवन नायर (आई० सी० 508), विद्युत एवं यांत्रिक इंजीनियर्स
7. मेजर जनरल मोहम्मद अहमद जाकी (आई० सी० 76 3), वीर चक्र, मराठा लाइट इन्फैन्ट्री
8. मेजर जनरल धीरेन्द्र दत्त सकलानी (आई० सी० 7 79), इन्फैन्ट्री
9. मेजर जनरल राजिन्दर सिंह चौधरी (आई० सी० 51), इंटेलिजेंस कोर (सेवा निवृत्त)
10. रियर एडमिरल जगत नारायण शुकुल (50027 वाई
11. रियर एडमिरल रण विजय सिंह (00158 एच)
12. रियर एडमिरल अरुण औदित्तो, नौ० से० मे० (00176 जेड)
13. एयर वाइस मार्शल गुरशरण सिंह, वा० से० मे०, वि० से० मे० (4233), वैमानिक इंजीनियर (यांत्रिक)
14. एयर वाइस मार्शल पटाथिल वेणुगोपाल (4431) उड़ान (पायलट)
15. एयर वाइस मार्शल दीदार सिंह सभरवाल (4393) उड़ान (नेविगेटर)
16. एयर वाइस मार्शल गिरीश कृष्णलाल देसाई (4468) संभारिकी
17. एयर वाइस मार्शल श्रीधर लक्ष्मीनारायणन (5565) मौसम विज्ञान (सेवानिवृत्त)
18. ब्रिगेडियर शान्तनु कुमार डे (आई० सी० 6106), कवचित कोर
19. ब्रिगेडियर कृष्ण कुमार मल्होत्रा (आई० सी० 7086), इंजीनियरी
20. ब्रिगेडियर दयानन्द खुराना (आई० सी० 7027), सिगनल्स
21. ब्रिगेडियर संतोष गोपाल मुकर्जी (आई० सी० 7017), वि० से० मे०, सिगनल्स
22. ब्रिगेडियर बालकृष्ण गुनाटा (आई० सी०-7811), आर्टिलरी
23. ब्रिगेडियर श्रीकृष्ण विश्वम्भर गणेशपांडे (आई० सी० 7899) वि० से० मे०, इन्फैन्ट्री
24. ब्रिगेडियर हरीश कुमार कपूर (आई० सी० 8236), आर्टिलरी
25. ब्रिगेडियर राजेन्द्र पाल सिंह (आई० सी० 8114), वि० से० मे०, इन्फैन्ट्री
26. ब्रिगेडियर गुरदीप सिंह (आई० सी० 8593), इन्फैन्ट्री
27. ब्रिगेडियर रणबीर सिंह (आई० सी० 8621), वीर चक्र, इन्फैन्ट्री
28. ब्रिगेडियर कटनकोट्ट चन्द्रशेखरन (आई० सी० 1172), इंजीनियरी
29. ब्रिगेडियर सतिन्दर कुमार पुरी (आई० सी० 101 3), इन्फैन्ट्री
30. ब्रिगेडियर जवाहरलाल मल्होत्रा (आई० सी०-101), वि० से० मे०, मेकनाइज्ड इन्फैन्ट्री
31. ब्रिगेडियर नवीन कंवल सैनी (आई० सी० 101 2), इन्फैन्ट्री
32. ब्रिगेडियर प्रबोध चन्द्र पुरी (आई० सी० 10441), वि० से० मे०, इन्फैन्ट्री
33. ब्रिगेडियर वेद प्रकाश मलिक (आई० सी० 11537), इन्फैन्ट्री
34. ब्रिगेडियर अवतार सिंह बैंस (आई० सी०-11688), इन्फैन्ट्री

35. ब्रिगेडियर नरेन्द्र कुमार कपूर (आई० सी०-11530), इन्फैन्ट्री

36. ब्रिगेडियर सतीश चन्द्र कश्यप (आई० सी०-11691), इन्फैन्ट्री

37. ब्रिगेडियर वीरेन्द्र कुमार छिब्बर (आई० सी०-11901), वि० से० मे०, इन्फैन्ट्री

38. ब्रिगेडियर मरमना परमेश्वरन गोविन्दन कुट्टि मेनन (आई० सी०-1 21009), जज एडवोकेट जनरल का विभाग

39. ब्रिगेडियर त्रिलोचन सिंह चौधरी (आई० सी०-8208), सिगनल्स

40. ब्रिगेडियर मनजीत सिंह साहनी (आई० सी०-12188), कवचित कोर

41. ब्रिगेडियर यशवन्त राय सचदेव (एम० आर०-873), सेना चिकित्सा कोर

42. कमोडोर भारत भूषण, नौ० से० मे० (40069 आर)

43. कमोडोर सुदर्शन कुमार चांद (00316 टी०)

44. कमोडोर विष्णु भगवत (00387 बी)

45. कमोडोर पृथ्वी राज सिंह (70037 ज्येड)

46. एयर कमोडोर डेंजिल कीलॉर, कीर्ति चक्र, वीर चक्र (4805) उड़ान (पायलट)

47. एयर कमोडोर सुरजीत सिंह मल्होत्रा, वा० से० मे० (4831) उड़ान (पायलट)

48. एयर कमोडोर उत्तम खुशलानी (4959) वैमानिक इंजीनियरी (यांत्रिक)

49. एयर कमोडोर रणवीर कुमार (5264) लेखा

50. कर्नल भूपिन्दर जीत सिंह ओबराय (आई० सी०-12877), आर्टिलरी

51. कर्नल देविन्दर नाथ बढ़ेरा (डी० आर०-10090) सेना दंत-चिकित्सा कोर

52. कर्नल बलीत सिंह (आई० सी०-6817), इन्फैंट्री (सेवानिवृत्त)

53. कैप्टन इंद्रजीत बेदी (00327 टी)

54. सर्जन कैप्टन नारायण प्रसाद मुखर्जी (75065 ए)

55. ग्रुप कप्तान सैयद मोहम्मद ओजमा (5690) चिकित्सा

56. ग्रुप कैप्टन अविनाश चन्द्र गोयल (6503) उड़ान (पायलट)

सं० 27-प्रेज/86—राष्ट्रपति, निम्नांकित व्यक्तियों को उनक असाधारण विशिष्ट सेवा के उपलक्ष्य में "अति विशिष्ट सेवा मेडल का बार" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :—

1. मेजर जनरल रवीन्द्र गुप्ता (आई० सी०-5344), अ० वि० से० मे० सेना सेवा कोर (सेवानिवृत्त)

2. ब्रिगेडियर हरीश चन्द्र जोशी (आई० सी०-7637), अ० वि० से० मे०, इन्फैन्ट्री

सं० 28-प्रेज/86—राष्ट्रपति निम्नलिखित व्यक्तियों को उत्कृष्ट वीरता के लिए "कीर्ति चक्र" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते है :—

1. श्री बुंदू खान, (मरणोपरांत)
यमुना विहार

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 31 मार्च, 1984)

31 मार्च, 1984 को दोपहर लगभग 12.30 बजे पांच सशस्त्र लुटेरे यमुना विहार, दिल्ली में श्री आई० सी० गोयल के मकान में घुसे। उन्होंने श्री गोयल, जो उस समय अपने घर पर ही थे, से सभी मूल्यवान वस्तुएं उन्हें सौंपने को कहा। श्री गोयल ने एक लुटेरे को दबोच लिया लेकिन दूसरे लुटेरे ने श्री गोयल की बड़ी निर्दयता से पिटाई की। श्री गोयल की लड़की की सहायता के लिए चिल्लाने की आवाज सुनकर मोहल्ले के लोग आ गए और उन्होंने लुटेरों का पीछा किया। इसी दौरान पुलिस मौके पर पहुंच गई और अपराधियों का पीछा किया।

उस क्षेत्र के एक निष्ठावान सामाजिक कार्यकर्ता श्री बुंदू खान भी उनके पीछे दौड़े। "डी" ब्लाक गोकल पुरी पहुंचने पर उनमें से एक अपराधी पीछे मुड़ा और उसने पीछे आ रहे लोगों और पुलिस को धमकी दी। उसकी धमकियों की परवाह न करके श्री बुंदू खान ने अपराधी मोहम्मद अहसन को पकड़ने के लिए आगे छलांग लगाई। अपराधी ने खतरा अनुभव करते हुए गोली चला दी जो श्री बुंदू खान के सिर में लगी और उसी दिन अस्पताल में श्री बुंदू खान की मृत्यु हो गई। सहायक उप निरीक्षक चन्द्र पाल सिंह ने अपराधी का पीछा किया और उसे पकड़ लिया। इस अपराधी से पूछताछ करने पर तीन और अपराधियों को गिरफ्तार करने में सहायता मिली।

इस प्रकार श्री बुंदू खान ने उत्कृष्ट साहस और उच्च कोटि की जन सेवा का परिचय दिया जिसके कारण कुख्यात अपराधियों को गिरफ्तार किया जा सका।

2. 152779 राइफलमैन गोपाल चन्द, (मरणोपरांत)
15 असम राइफल्स

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 2 दिसम्बर, 1984)

2 दिसम्बर, 1984 को राइफलमैन गोपाल चन्द उस विशेष गश्ती दल में सबसे प्रमुख थे जिसे एक सीमा चौकी के रास्ते में छिपे नागा विद्रोहियों का सफाया करने के लिए भेजा गया था। नागा विद्रोहियों ने सीमा चौकी क्षेत्र में दो सीधी चट्टानों पर किलेबंदी की हुई थी और लगभग 1100 गज की दूरी पर घात लगाए बैठे थे। विद्रोहियों ने रास्ते में सुरंग बिछाई हुई थी और वे सभी रास्तों पर स्वचालित हथियारों से लैस बैठे थे। ज्योंही राइफलमैन गोपाल चन्द घात वाले स्थान के पास पहुंचे, गश्ती दल पर गोलियों की बौछार शुरू हो गई। अपनी जान की बिल्कुल भी परवाह न करते हुए राइफलमैन गोपाल चन्द ने विद्रोहियों पर धावा बोल दिया। यह कार्रवाई करते समय जब वे एक सुरंग पर रुके तो उसके फलस्वरूप इनकी दोनों टांगें बारूद से उड़ गईं। उनकी टांगों से काफी खून बह जाने पर भी बहादुर राइफलमैन गोपाल चन्द अपने आपको घसीटते रहे और विद्रोहियों को घात स्थान से नीचे न आने देने और अपने दल को खतरे से बचाने के लिए निरन्तर गोलीबारी करते रहे। वीरगति प्राप्त होने तक वे अपने शौर्य का प्रदर्शन करते रहे।

इस प्रकार राइफलमैन गोपाल चन्द ने उत्कृष्ट शौर्य, अदम्य साहस, अद्भुत दृढ़ संकल्प, अति असाधारण कोटि की कर्त्तव्य परायणता और सेना की उच्चतम परम्पराओं के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी।

3. मेजर जय बहुगुणा (आई०सी०-25182), (मरणोपरान्त)
सेना मेडल, वि०से०मे०, (इंजीनियर्स)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 7 अक्तूबर 1985)

मेजर जय बहुगुणा, सेना एवरेस्ट अभियान, 1985 के उपनेता थे। उन्हें प्रथम शिविर तथा द्वितीय शिविर के बीच का रास्ता ठीक करने की जिम्मेदारी सौंपी गई थी जिसे उन्होंने ½ दिन के रिकार्ड समय में रेखांकित कर दिया। बाद में उन्होंने रास्ता बनाना शुरू किया और 20 से 23 सितम्बर तक के तीन दिनों में तृतीय शिविर तथा चतुर्थ शिविर स्थापित कर दिया। इस प्रकार अभियान दल और तेजी से आगे बढ़ने लगा।

मेजर बहुगुणा द्वितीय पर्वतारोहण दल के नेता थे। इस दल ने 7 अक्तूबर, 1985 को माऊंट एवेरेस्ट पर चढ़ते समय प्रथम पर्वतारोहण दल को सहायता प्रदान करनी थी। दुर्भाग्यवश पैर फिसल जाने से 7 अक्तूबर, 1985 को मेजर किरण इन्द्र कुमार की मृत्यु हो गई जो दक्षिणी मार्ग का मार्ग निर्देशन कर रहे थे। उसके बाद वह काम भी मेजर बहुगुणा ने संभाला। 8, 9 और 10 अक्तूबर, 1985 को एवरेस्ट क्षेत्र के बहुत ही खराब मौसम में अपने बीमार साथियों और अन्य सदस्यों को दक्षिणी मार्ग से नीचे वापस लाने का प्रयास किया लेकिन सफल नहीं रहे। उन्होंने निचले शिविरों में वापस आने से इंकार कर

दिया और 11 अक्तूबर, 1985 को प्रतिकूल वातावरण में वीर-गति प्राप्त करने तक अपने बीमार रस्सी पकड़ने वाले साथियों के साथ वहीं ठहरे रहे ।

इस प्रकार मेजर जय बहुगुणा ने उत्कृष्ट वीरता, नेतृत्व और सौहार्द का प्रदर्शन करते हुए अपना प्राणोत्सर्ग कर दिया ।

4. 1258936 हवलदार इन्द्र बहादुर गुरुंग, आर्टिलरी

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 11 अक्तूबर 1985)

हवलदार इन्द्र बहादुर गुरुंग सेना एवरेस्ट अभियान 1985 के प्रमुख पर्वतारोहियों में थे । ये उन पर्वतारोहण दलों के सदस्य भी थे जो खराब मौसम में 28,700 फुट पर दक्षिण शिखर और 27,600 फुट पर शिखर कैम्प तक पहुंचे । 11 अक्तूबर, 1985 को इन्हें कैम्प से साउथ कौल तक रास्ता बनाने का काम सौंपा गया । खराब मौसम और बर्फानी तूफान के कारण चुनौतीपूर्ण, दुस्साध्य और विषम परिस्थितियों में ये अपने साथियों के पास पहुंचने में सफल हुए । इन्होंने शाम के समय साउथ कौल से लेफ्टिनेंट एम०यू०बी० राव को बचाने का प्रयास किया परन्तु इनके अथक प्रयासों के बावजूद लेफ्टिनेंट राव की मृत्यु हो गई ।

इस प्रकार हवलदार इन्द्र बहादुर गुरुंग ने उत्कृष्ट वीरता और उच्चकोटि के साहस का परिचय दिया ।

सं० 29-प्रेज/86—राष्ट्रपति, निम्नलिखित व्यक्तियों को वीरता के लिए "शौर्य चक्र" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :—

1. श्री परम सिंह ठाकुर,
मध्य प्रदेश ।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 3 जून 1982)

3 जून, 1982 को रात के लगभग 10.30 बजे मध्य प्रदेश में सागर जिले के कौठोरा गांव में श्री परम सिंह के मकान पर आठ सशस्त्र डाकुओं के गिरोह ने धावा बोल दिया । श्री परम सिंह उस समय घर में नहीं थे और जब इन्होंने अपने भाइयों और पड़ोसियों से डाके के बारे में सुना तो ये मकान की ओर तेजी से दौड़े । ये क्या देखते हैं कि एक डाकू घर के सामने खड़ा है और सबको भयभीत किए हुए है । डाकू द्वारा चेतावनी देने पर भी ये उस पर केवल लाठी से ही टूट पड़े । डाकू ने इन पर गोली दागी । लेकिन श्री परम सिंह एकदम नीचे बैठ गए और फिर आगे बढ़े तथा अपने आदमियों को डाकुओं का पीछा करने के लिए कहा । इस साहसिक चुनौती से डाकुओं के हौंसले पस्त हो गए और उन्होंने घर से निकल कर भागना शुरू कर दिया । गांव वालों ने श्री परम सिंह के नेतृत्व में उनका पीछा किया ।

उनमें से एक डाकू ने श्री परम सिंह पर दुबारा गोली चला दी । इनके घुटने में एक गोली लगी जिसके कारण काफी खून बहना शुरू हो गया और इनके लिए चलना-फिरना कठिन हो गया । इससे पहले कि डाकू फिर से गोली चला सके, इन्होंने डाकू के सिर में तेजी से लाठी मारी और इसके साथ ही दूसरे डाकू के सिर में भी लाठी मारी जो कि एक बैटरी थामे हुए था । इसके बाद वहां अंधेरा हो गया । श्री परम सिंह ने लाठी की जबरदस्त चोट मारकर एक अन्य डाकू को भी निहत्था कर दिया । इससे डाकुओं का मनोबल पूरी तरह टूट गया और वे बचकर भाग निकले । एक घायल डाकू को पकड़ लिया गया और उससे एक बंदूक और कारतूसों की पेटी बरामद हुई । लेकिन बाद में उस डाकू की मृत्यु हो गई ।

इस प्रकार श्री परम सिंह ने अपने जीवन के खतरे से बेखबर होकर आठ सशस्त्र डाकुओं का सामना करने में असाधारण सूझ-बूझ, साहस और वीरता का परिचय दिया ।

2. जी/108767 एक्सकवेटिंग मशीनरी ऑपरेटर जालम

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 19 फरवरी 1984)

फरवरी, 1984 में कश्मीर में पिछले दो दशकों का सबसे भारी हिमपात हुआ था और जम्मू-कश्मीर राजमार्ग पर 8 से 10 फुट बर्फ जम गई थी जिसके परिणामस्वरूप 19 फरवरी, 1984 को कश्मीर घाटी का संपर्क शेष भारत से पूरी तरह कट गया था । ऑपरेटर जालम सिंह को श्री सतेन्द्र कुमार के पर्यवेक्षण में बर्फ हटाने की दो रोल्वा मशीनों के साथ राष्ट्रीय राजमार्ग से बर्फ हटाने का काम सौंपा गया । 19 फरवरी, 1984 को साढ़े ग्यारह बजे जब ये बर्फ हटा रहे थे तब बर्फ हटाने वाली दो मशीनें भारी हिमस्खलन के नीचे दब गईं । श्री जालम सिंह ने हिम्मत बटोरी तथा छाती तक ऊंची बर्फ में से चल कर उस जगह तक पहुंच गए, जहां रोल्वा मशीनें दबी पड़ी थीं और अपने इंचार्ज और अन्य दो प्रचालकों को बर्फ से निकाला । बची हुई एक-मात्र मशीन से इन्होंने बर्फ हटाने का काम जारी रखा । इस कार्य में इन्हें कई सक्रिय हिम-स्खलनों, खराब मौसम, 90 से 100 कि०मी० प्रति घंटे की रफ्तार से चलने वाले तेज बर्फीले अंधड़ों और शून्य से 9 डिग्री से नीचे तापमान का सामना करना पड़ा और अन्त में 23 जनवरी, 1984 को इन्होंने दक्षिण जवाहर सुरंग तक की सड़क को यातायात के लिए खोलने में कामयाबी हासिल की ।

इस प्रकार श्री जालम सिंह ने बहुत ही खराब मौसम में साहस और उच्चकोटि की कर्तव्य परायणता का परिचय दिया ।

3. फ्लाइट लेफ्टिनेंट सतीश पुरुषोत्तम अपराजित (14069), एकाउन्ट्स

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 28 फरवरी 1984)

फ्लाइट लेफ्टिनेंट सतीश पुरुषोत्तम अपराजित सफल ट्रांस हिमालय मोटर अभियान के सदस्य थे । यह अभियान बर्फीले, निर्जन स्थानों, ऊंचे पर्वतों की तंग घाटियों और 15 से अधिक पहाड़ी दर्रों को पार करते हुए पूरा हुआ जिसमें इस दल को शून्य से भी कम तापमान वाले क्षेत्र में चट्टानों से टकराती हुई तेज बर्फीली हवाओं और तूफानों का सामना करना पड़ा । 28 फरवरी, 1984 को इस अभियान दल की एक गाड़ी दुर्घटनाग्रस्त हो गई और 1000 मीटर से अधिक ऊंची चट्टान से नीचे गिर गई । फ्लाइट लेफ्टिनेंट अपराजित हताहतों की तलाश करने के लिए उस खड़ी चट्टान से रस्से के सहारे नीचे उतरे, जहां तंग घाटी सघन झाड़-झंखाड़ से ढकी हुई थी । ये वहां से एक ऐसे सदस्य को ढूंढ निकालने में सफल हुए जिसे बहुत चोटें आई हुई थीं । अपने मुंह से घायल के मुंह में श्वास देने की कृत्रिम श्वास प्रक्रिया के बाद उसे तुरन्त चिकित्सा सहायता देने के लिए ये एक डाक्टर को लाए और फिर उस घायल को काफी दूर तक अपनी पीठ पर लाद कर ले गए । जब ये आखिरी खड़ी चट्टान पर चढ़ रहे थे तभी रस्सा हाथ से छूट गया और ये 100 फुट से अधिक नीचे की ओर फिसल गए किन्तु बाल-बाल बच गए । लेकिन इन्होंने बड़ी दृढ़ता से उस घायल को पकड़े रखा और उसे सुरक्षित सड़क तक पहुंचाने में सफल हुए ।

इस प्रकार फ्लाइट लेफ्टिनेंट सतीश पुरुषोत्तम अपराजित ने अदम्य साहस, दलनिष्ठा और निस्वार्थ सेवा-भाव का परिचय दिया ।

4. 40444969 कम्पनी हवलदार मेजर प्रताप सिंह,
गढ़वाल राइफल्स ।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 8 मार्च, 1984)

8 मार्च, 1984 को मिजो राष्ट्रीय मोर्चे के विद्रोही घुसपैठियों को बंगला देश से मिजोरम दाखिल होने से रोकने के लिए कार्रवाई की गई । विशेष गश्ती दल के कम्पनी हवलदार मेजर प्रताप सिंह को उनकी तलाश करने और उनके इरादों को नाकाम करने का काम सौंपा गया था । उन्होंने दृढ़ निश्चय होकर घने जंगलों वाले पहाड़ी इलाके को छान मारा । इन्होंने विद्रोहियों का पता लगाने के लिए बड़े दुर्गम इलाके में सात दिन तक गश्ती दल का नेतृत्व किया और इसके पश्चात् एक ऐसी जगह चुनी जहां से घात लगाकर उन पर अचानक भरपूर वार किया जा सकता था । 19 मार्च, 1984 को इनकी मेहनत तब रंग लाई जब तीन मिजो विद्रोही उस जगह दाखिल हुए । जब उन्हें ललकारा गया तो आगे चलने वाले विद्रोही ने अपनी अर्द-स्वचालित

राइफल से कम्पनी हवलदार मेजर प्रताप सिंह पर गोली चलाई, लेकिन वे बिल्कुल घबराए नहीं और दल को फायर करने का संकेत दिया। इन्होंने अपनी मशीन कार्बाइन से गोली चलाकर विद्रोही दल के नेता को मार गिराया। इससे प्रेरित होकर उनके साथी दल के सिपाहियों ने दो और विद्रोहियों का पीछा किया और एक मुठभेड़ में दोनों को मार गिराया। इस कार्रवाई के दौरान एक अर्ध-स्वचालित राइफल, एक पिस्तौल, एक हथगोला और 75 गोलियां बरामद हुए।

इस प्रकार हवलदार मेजर प्रताप सिंह ने उत्कृष्ट वीरता, व्यावसायिक दक्षता और उच्चकोटि की कर्त्तव्य परायणता का परिचय दिया।

5. जी/85328 एक्सकेवेटिंग मशीनरी आपरेटर गोविंद राम

(मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 8 मार्च, 1984)

एक्सकेवेटिंग मशीनरी आपरेटर गोविन्द राम को उनके डोजर के साथ जम्मू और कश्मीर में "गूल" से "मोहर" तक पहाड़ काटकर सड़क बनाने के काम पर लगाया गया था। 8 मार्च, 1984 को सायं 4.30 बजे दिनभर की कड़ी मेहनत के बाद जब वह अपने डोजर को सुरक्षित स्थान पर ले जा रहे थे तो उन्होंने पहाड़ के ऊपरी भाग से अचानक भू-स्खलन होते देखा। अपनी जान की परवाह न करते हुए वे अपने डोजर को घाटी में लुढ़कने से बचाने के लिए चलाते रहे लेकिन इस दौरान वे ऊपर से गिरते मलबे के नीचे दब गए और उनका निधन हो गया।

इस प्रकार श्री गोविन्द राम ने उत्कृष्ट कार्य कौशल, साहस, दृढ़ता और उच्चकोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

6. कुमारी सविता गोयल,
यमुना विहार,
दिल्ली।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 31 मार्च, 1984)

31 मार्च, 1984 को लगभग दोपहर 12.30 बजे पांच सशस्त्र लुटेरे यमुना विहार, दिल्ली में श्री आर० सी० गोयल के मकान में आ घुसे। उनमें से दो के पास गोलियों से भरी हुई देसी पिस्तौलें थी और बाकी तीन चाकू लिए हुए थे। उन्होंने श्री गोयल से, जो उस समय अपनी बैठक में ही थे, सभी कीमती सामान उन्हें सौंप देने के लिए कहा। श्री गोयल ने एक लुटेरे को दबोच लिया लेकिन अन्य लुटेरों ने श्री गोयल को निर्दयता से पीटना शुरू कर दिया। यह देखकर श्री गोयल की चौदह वर्षीय पुत्री कुमारी सविता रसोईघर से भाग कर आई और एक लुटेरे को पकड़ लिया। लुटेरे ने इन्हें चाकू से डराया लेकिन इन्होंने उसे नहीं छोड़ा। इसी समय एक लुटेरे ने श्री गोयल पर गोली चला दी जिससे श्री गोयल गंभीर रूप से घायल हो गए और कुमारी सविता को भी चोटें आईं। तब पांचों लुटेरे घर से बाहर आ गए और विभिन्न दिशाओं में भागने लगे। इसी तरह घायल होने पर भी कुमारी सविता ने उनका कुछ दूर तक पीछा किया और मदद के लिए जोर-जोर से चिल्लाई। यह सुनकर लोग इकट्ठे हो गए और उन्होंने लुटेरों का पीछा किया। इसी दौरान पुलिस भी आ गई और लुटेरों का पीछा करके उनमें से एक को पकड़ लिया।

इस प्रकार कुमारी सविता गोयल ने सशस्त्र डाकुओं से मुठभेड़ में अनुकरणीय साहस और वीरता का परिचय दिया।

7. 7115305 नायक राम कुमार मिश्र, ई० एम० ई०

(मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 7 अप्रैल, 1984)

गाड़ी मैकेनिक नायक राम कुमार मिश्र अपने घर गांव खुसरूपत्ती, जिला मेरेपुर (सहरसा), बिहार में सालाना छुट्टी पर थे। इस दौरान 7 अप्रैल, 1984 की रात को कुछ डाकुओं ने उनके गांव पर हमला किया। नायक राम कुमार के पास कोई हथियार नहीं था, फिर भी, अपनी जान की परवाह किए बिना वे तुरन्त अपने पड़ोसी सालिग्राम झा को बचाने के लिए दौड़े। उन्होंने दो डाकुओं को दबोच लिया और उन्हें नीचे गिरा दिया। जब दो डाकुओं को अन्य डाकू उनकी गिरफ्त से न छुड़ा सके तो एक ने उन पर गोली चला दी जिससे नायक राम कुमार मिश्र की मृत्यु हो गई।

इस प्रकार नायक राम कुमार मिश्र ने उत्कृष्ट वीरता और उच्च-कोटि की नागरिक भावना का परिचय दिया।

8. जी/8769 एम० ड्राइवर मैकेनिकल इक्विपमेंट ठाकुर दास

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 10 अप्रैल, 1984)

166 फार्मेशन कटिंग प्लाटून के ड्राइवर मैकेनिकल इक्विपमेंट ठाकुर दास को पहाड़ काट कर केलांग दारचा सड़क को चौड़ा करने का काम सौंपा गया था। यह सड़क कठोर चट्टानी इलाके से होकर गुजरती है जिसमें बहुत जगहों पर सीधी ढलान है इसलिए इस पर बहुत ऊंचाई से सीधी कटान करने की जरूरत थी। 10 अप्रैल, 1984 को अपना काम करते हुए श्री ठाकुर दास भू-स्खलन में फंस गए और अपनी मशीन के साथ मलबे के नीचे दब गए। ऐसी विकट स्थिति में श्री ठाकुर दास ने अपनी गंभीर चोटों के बावजूद अपनी सूझ-बूझ नहीं खोई और धैर्य, साहस और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय देते हुए डोजर को चलाकर किसी तरह उसे वहां से दूर सुरक्षित स्थान पर निकाल लाने में सफल हुए। ऐसा करते हुए इन्हें दोनों टांगों और बांये हाथ पर गहरी चोटें आईं और इनके अन्य अंगों ने भी काम करना बंद कर दिया।

इस प्रकार ड्राइवर मैकेनिकल इक्विपमेंट ठाकुर दास ने साहस, व्यावसायिक कुशलता और उच्चकोटि की कर्त्तव्य परायणता का परिचय दिया।

9. जे०सी०-10015 सूबेदार मोहन सिंह,
तोपखाना

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 14 मई 1984)

सूबेदार मोहन सिंह गोरखा रिज की रक्षा चौकी पर तोपखाना आपरेटर की ड्यूटी पर तैनात किए गए थे। 14 मई, 1984 को उनकी यूनिट के नायक राम सिंह पैर फिसलने की वजह से सुरंग बिछे क्षेत्र में गिर पड़े जहां सुरंग से उनकी दाहिनी टांग कट गई। नायक राम सिंह सुरंग बिछे क्षेत्र में पड़े हुए थे और उनके घाव से बड़ी तेजी से खून बह रहा था। कोई भी उस खतरनाक सुरंग बिछे क्षेत्र में जाने के लिए तैयार नहीं था। सूबेदार मोहन सिंह स्वेच्छा से आगे बढ़े और इन्होंने तीन अन्य रैंकों को भी अपने साथ चलने के लिए तैयार किया। अपने दल को बाहर छोड़कर वे बड़ी बहादुरी के साथ सुरंग बिछे क्षेत्र में घुस गए और नायक राम सिंह को उठाकर सुरंग से बाहर एक चट्टान पर ले आए। बाद में नायक राम सिंह का दाहिना पैर काट दिया गया लेकिन उनकी जान बचा ली गई।

इस प्रकार सूबेदार मोहन सिंह ने अपनी जान की परवाह किए बगैर अपने साथी को बचाने के लिए स्वैच्छा से कार्य करने में साहस, पहलशक्ति तथा निर्भीकता का प्रदर्शन किया।

10. जे०सी०-74856 सूबेदार नायब सिंह महल, पंजाब

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 6 जून, 1984)

सूबेदार नायब सिंह महल, बर्मा के साथ अन्तर्राष्ट्रीय सीमा पर निगरानी कर रहे गश्ती दल के प्रभारी अधिकारी थे। 6 जून, 1984 को इनके गश्ती दल ने एक विद्रोही नागा को एक "नाले" में कपड़े धोते हुए देखा और उसे पकड़ लिया। इसके तत्काल बाद इन्हें विद्रोहियों की भारी गोलाबारी का सामना करना पड़ा। कुशल प्रहार शक्ति का प्रदर्शन करते हुए इन्होंने जवाबी हमला कर विद्रोहियों का शिविर नष्ट कर दिया। इस कार्रवाई में छः नागा विद्रोही मारे गए और एक विद्रोही को बंदी बना लिया गया जिसके पास 2 एम-21 (चीनी) राइफलें, 61-एम 21 कारतूस और काफी आपत्तिजनक दस्तावेज बरामद हुए। प्राप्त दस्तावेजों से नागालैंड की नेशनल सोशलिस्ट काउंसिल के गठन के बारे में सूचना मिली जो अनुवर्ती कार्रवाई करने में सहायक सिद्ध हुई।

इस प्रकार सूबेदार नायब सिंह महल ने साहस सूझ बूझ, नेतृत्व और उच्चकोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

11. 4170264 लांस नायक रणजीत सिंह, (मरणोपरांत) कुमाऊं

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 6 जून, 1984)

6 जून, 1984 को कुमाऊं रेजिमेंट के लांस नायक रणजीत सिंह को एक धार्मिक स्थान से आतंकवादियों को निकाल देने का आदेश दिया गया। इस इमारत की मजबूत किलेबंदी की गई थी और आतंकवादियों के आत्मघाती दस्तों के कब्जे में थी। आतंकवादियों ने आगे बढ़ती कम्पनी पर मंझली और हल्की मशीनगनों से जोरदार फायर किया जिससे कई हताहत हुए। लांस नायक रणजीत सिंह ने देखा कि इमारत की बांई ओर दीवार की मेंडर से एक हल्की मशीनगन से फायर हो रहा था जिससे उनकी सेना टुकड़ी का आगे बढ़ना मुश्किल हो गया था। ऐसी स्थिति में लांस नायक रणजीत सिंह ने अदम्य साहस दिखाकर उस मशीनगन पर तुरन्त हमला करते हुए आतंकवादी तोपचियों को उसी स्थान पर मार गिराया। लेकिन इस दौरान उन्हें उस मशीनगन की गोली लगी। फिर भी कम्पनी बिना किसी नुकसान के आगे बढ़ती गई। कार्रवाई पूरी होने के बाद इस बहादुर सैनिक का शव दो आतंकवादी तोपचियों की लाशों के बीच पड़ा पाया गया।

इस प्रकार लांस नायक रणजीत सिंह ने उत्कृष्ट वीरता, अदम्य साहस, उच्चकोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया और सेना की उच्चतम परम्पराओं के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी।

12. 4064837 राइफलमैन देवेन्द्र प्रसाद, (मरणोपरांत) गढ़वाल राइफल्स

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 7 जून, 1984)

6/7 जून, 1984 की रात को आठ अन्य रैंकों का एक गश्ती दल जब कुछ ज्ञात आतंकवादियों के घरों की तलाशी ले रहा था तो तेज निशानेबाज राइफलमैन देवेन्द्र प्रसाद दल के स्काउट के रूप में तैनात थे। घरों की तलाशी लेने की प्रक्रिया के दौरान वे अपनी जान की परवाह किए बिना आतंकवादियों के छुपने के संदिग्ध स्थानों को ढूंढ निकालने में सबसे आगे रहे और एक बार जब एक मकान की छत से गश्ती दल पर स्वचालित हथियारों से फायर किया गया तो राइफलमैन देवेन्द्र प्रसाद ने आतंकवादियों के जोरदार फायर के बीच उस मकान के मुख्य दरवाजे की ओर दौड़कर इस इरादे से उसे तोड़ कर खोलना चाहा कि छत पर पहुंच कर आतंकवादियों को पकड़ लिया जाए। लेकिन इस बीच साथ वाली छत की दीवार के पीछे छिपे एक आतंकवादी ने राइफलमैन देवेन्द्र प्रसाद को पीठ पर गोली मार दी और उनकी तत्काल मृत्यु हो गई।

इस प्रकार राइफलमैन देवेन्द्र प्रसाद ने उत्कृष्ट साहस, बहादुरी और अति असाधारण कोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

13. कैप्टन यदविन्दर सिंह महिवाल (आई०सी०-38363), डोगरा रेजिमेंट

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 9 जून, 1984)

9 जून, 1984 को जब कैप्टन यदविन्दर सिंह महिवाल, 12 डोगरा रेजिमेंट की राइफल कम्पनी का नेतृत्व कर रहे थे तो इन्हें सूचना मिली कि इनकी निगरानी क्षेत्र के एक गांव में उग्रवादी छिपे हुए हैं। ये तत्काल एक टोह दल लेकर उस गांव में संदिग्ध उग्रवादी जगजीत सिंह के मकान के पास पहुंचे तो देखा कि दो सशस्त्र आदमी खिड़की की दहलीज पर लड़ने के लिए तैयार बैठे हैं। अदम्य साहस दिखाते हुए ये मकान में घुसे और अचानक तेजी से जगजीत सिंह पर झपट कर उससे हथियार छीन लिया। दूसरा उग्रवादी खिड़की से बाहर कूद गया और भाग निकला। अपने जीवन की बिल्कुल भी परवाह न करते हुए इन्होंने तत्काल उग्रवादी का पीछा किया। इससे पहले कि उग्रवादी गोली चला पाए इन्होंने उसे पकड़ लिया। इस कार्रवाई में एक चीनी सेल्फ लोडिंग राइफल, एक 7.62 एम०एम० सेल्फ लोडिंग राइफल, 7.62 एम०एम० की 340 गोलियां, .38 पिस्तौल की तीन गोलियां और .22 पिस्तौल की 22 गोलियां बरामद की गईं।

इस प्रकार कैप्टन यदविन्दर सिंह महिवाल ने वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

14. कर्नल रणजीत सिंह मावी (आई०सी०-12603), इन्फैन्ट्री

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 11 जून, 1984)

11 जून, 1984 को माउंटेन डिवीजन के प्रभारी कर्नल, कर्नल रणजीत सिंह मावी को इनके जनरल अफसर कमांडिंग ने पंजाब की घटनाओं के बाद एक यूनिट में जाकर उसमें काम कर रहे जवानों के हौंसले को जानकारी प्राप्त करने को कहा। संबंधित यूनिट में कुछ समय बिताने के बाद कर्नल मावी जब रात को स्वयं गाड़ी चला कर वापिस आ रहे थे तो इन्होंने गोलियां चलाने की आवाज सुनी। इन्होंने तुरन्त अपनी गाड़ी यूनिट लाइन की ओर मोड़ी और वहां पहुंचने पर देखा कि सैनिकों ने दरवाजे तोड़ दिए हैं और अपने आपको हथियारों से लैस कर लिया है। जब इन्हें कोई यूनिट अफसर नहीं मिला तो यह स्थिति को संभालने के लिए स्वयं आगे आए। अपने जीवन की परवाह न करते हुए ये तनिक भी विचलित नहीं हुए और गुमराह सैनिकों की गोलाबारी का सामना करते हुए कम्पनी लाइन से दूसरी लाइन तथा फिर यूनिट मैगजीन तक पहुंचे। इसप्रकार असाधारण नेतृत्व का परिचय देते हुए इन्होंने वहां के सैनिकों को अपने काबू में ले लिया और अगले दिन 0700 बजे तक सभी सैनिकों से हथियार डलवा दिए।

इस प्रकार कर्नल रणजीत सिंह मावी ने उत्कृष्ट वीरता, अनुकरणीय नेतृत्व और उच्चकोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

15. कैप्टन अरविंद कुमार सिन्हा (आई०सी०-40410), गढ़वाल राइफल्स

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 12 जून, 1984)

मणिपुर के कशाय क्षेत्र में कमांडर, कैप्टन अरविंद कुमार सिन्हा को विद्रोहियों के भूमिगत छिपने के स्थान का पता लगाने और उन्हें पकड़ने का काम सौंपा गया था। इन्होंने अत्यंत सावधानी से कार्रवाई की योजना बनाई और 12 जून, 1984 को 0800 बजे गश्ती दल के साथ अपने निर्धारित कार्य पर रवाना हो गए। ऊबड़-खाबड़ जंगली रास्ते से होता हुआ बिना किसी की पहचान में आए गश्ती दल 0900 बजे कशाय विखर गांव के पास पहुंचा लेकिन जब वह दल गांव के दूसरे मकान के पास पहुंचा तो तीसरे मकान के सामने बंधे कुत्ते ने जोर-जोर से भौंकना शुरु कर दिया। कैप्टन सिन्हा को संदेह हुआ और ये दरवाजे की तरफ दौड़े और इन्होंने मकई के खेतों में से दो आदमियों को निकल कर भागते हुए देखा। अपने आदमियों को पीछा करने का आदेश देते हुए ये उनके पीछे दौड़े।

काफी पीछा करने के बाद एक विद्रोही एक कांटेदार झाड़ी से उलझ गया और कैप्टन सिन्हा उन पर झपट पड़े लेकिन उसी समय इनकी गारबाइन झाड़ी में उलझ कर नीचे गिर गई। इसके बाद आपस में हाथापाई शुरु हो गई और विद्रोही ने एक बार इन्हें गिरा दिया और इनके सिर में गोली दाग दी। सौभाग्यवश पिस्तौल में कोई गोली नहीं थी। निराश होकर विद्रोही ने इनके सिर में पिस्तौल का घोड़ा मारना शुरु कर दिया जिससे इनके चेहरे पर खून फैल गया। घावों की परवाह न करते हुए कैप्टन सिन्हा ने हार नहीं मानी और अन्ततः विद्रोही पर काबू पा लिया लेकिन विद्रोही बच निकलने में कामयाब हो गया और पास के जंगल में छुप गया। कैप्टन सिन्हा ने उसको टांगों में गोली मार कर उसे गिरा दिया। पूछताछ के दौरान विद्रोही ने बताया कि वह जुलाई 1983 में जेल से भागा था और उसका गिरोह कशाय क्षेत्र में सेना कॉन्वॉय पर घात लगाने वाला था। उससे

एक एम० 22 सब मशीनगन, एक एम 20 पिस्तौल, राकेट डेटोनेटर, हथगोले और काफी मात्रा में गोली-बारूद बरामद किया गया।

इस प्रकार कैप्टन अरविंद कुमार मिश्रा ने उत्कृष्ट शौर्य, साहस और उच्चकोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

16. 4169678 लांस नायक चंचल सिंह, कुमाऊं (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि 23 जून, 1984)

23 जून, 1984 को लांस नायक चंचल सिंह काफी ऊंचाई पर स्थित एक प्रेषण चौकी में जब एक बहुत ही मुश्किल काम पूरा करने में लगे हुए थे तो विद्रोहियों ने उन पर गोलियां चलाईं। जख्मी होने के बावजूद और जान की परवाह किए बिना लांस नायक चंचल सिंह अपने काम को पूरा करने में जुटे रहे लेकिन इस बीच जख्मी होने के कारण उनका प्राणान्त हो गया।

इस प्रकार लांस नायक चंचल सिंह ने अनुकरणीय साहस, दृढ़ता और उच्चकोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

17. 4168803 सवैनिक कार्यकारी नायक राम मेहर सिंह, कुमाऊं

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 5 जुलाई, 1984)

सवैनिक कार्यकारी नायक राम मेहर सिंह को कुछ अग्रवर्ती चौकियों के साथ तार-संचार व्यवस्था बनाए रखने के लिए उत्तरी-सैक्टर के अग्रवर्ती इलाकों में तैनात किया गया था। इन्हें 5 जुलाई, 1984 को एक अग्रवर्ती चौकी के साथ संपर्क बनाए रखने के लिए कई बार टेलीफोन लाइन ठीक करनी पड़ रही थी क्योंकि विद्रोही गोलाबारी करके उसे बार-बार नुकसान पहुंचा रहे थे। ऐसा करते हुए एक बार मशीनगन की बौछार इन पर लगी जिससे ये बुरी तरह जख्मी हो गए। अपनी जान की परवाह किए बिना और जख्मी होने के बावजूद इन्होंने उस टेलीफोन लाईन को फिर से चालू कर बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य पूरा कर दिखाया।

इस प्रकार नायक राम मेहर सिंह ने अनुकरणीय साहस, दृढ़ता और उच्चकोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

18. सैकिण्ड लेफ्टिनेंट शैलेश कुमार (आई०सी०—40855), बिहार (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 10 जुलाई, 1984)

10 जुलाई, 1984 को अमृतसर जिले के एक गांव में उग्रवादियों का पता लगाने के लिए सैकिण्ड लेफ्टिनेंट शैलेश कुमार को 10 अन्य रैंकों के साथ कैप्टन रवि दत्त की सहायता के लिए भेजा गया। अपनी टुकड़ी के साथ वे दस मिनट में ही गांव में जा पहुंचे और एक मकान की छत पर चढ़ गए। छत पर पहुंचने के बाद उन पर सरपंच जत्थेदार मोहन सिंह के मकान से जोरदार गोलाबारी होने लगी और सैकिण्ड लेफ्टिनेंट शैलेश कुमार गम्भीर रूप से घायल हो गए। अपने घावों की लेशमात्र भी चिन्ता न करते हुए वे छत की मुंडेर पर चढ़ गए और जत्थेदार मोहन सिंह पर स्टेनगन से गोलियां चलाईं और इस बात का ख्याल रखते हुए कि बेकसूर लोग न मारे जाएं, वे उग्रवादियों पर विभिन्न दिशाओं से गोली चलाने का निर्देश देते रहे। नियंत्रित गोलीबारी का नेतृत्व करते हुए वे वीरगति को प्राप्त हो गए।

इस प्रकार सैकिण्ड लेफ्टिनेंट शैलेश कुमार ने उत्कृष्ट साहस, नेतृत्व और उच्चकोटि की कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दिया।

19 कैप्टन प्रभज्योत सिंह शानी (आई सी—39361), डोगरा रेजिमेंट

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 12 जुलाई, 1984)

कैप्टन प्रभज्योत सिंह शानी की कम्पनी अन्तरराष्ट्रीय सीमा के बिल्कुल पास तैनात थी और उसे ग्रामीण इलाकों से उग्रवादियों को खदेड़ने का काम सौंपा गया था। 12 जुलाई, 1984 को कैप्टन प्रभज्योत सिंह को सूचना मिली कि एक कुख्यात तस्कर और उग्रवादी लखविंदर सिंह रोडे गांव में एक बारात में आ रहा है। ये उसे पकड़ने के लिए तत्काल एक गश्ती दल लेकर चल पड़े। इन्हें देखकर लखा सिंह खेतों में बच निकला। यह पूरी तरह जानते हुए भी कि लखा सिंह एक कट्टर अपराधी और अस्त्रों से लैस है, कैप्टन प्रभज्योत सिंह शानी उसके पीछे दौड़े। ये तेजी से दौड़े और अच्छी युद्ध कला का परिचय देते हुए उस पर झपट पड़े और उससे हथियार छीनकर उसे पकड़ लिया।

इस प्रकार कैप्टन प्रभज्योत सिंह शानी ने अपने जीवन को खतरे में डालकर उग्रवादी को पकड़ने में अदम्य साहस और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

20. जे सी—76942 सूबेदार मेजर लाल बहादुर छेत्री, 8 गोरखा राइफल्स

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 4 अगस्त, 1984)

4 अगस्त, 1984 को सूबेदार मेजर लाल बहादुर छेत्री को उत्तरी सैक्टर के अग्रवर्ती क्षेत्र में एक बहुत ही मुश्किल काम सौंपा गया था। प्रतिकूल परिस्थितियां होने और विद्रोहियों द्वारा गोलाबारी के बावजूद इन्होंने गश्ती दल का नेतृत्व करते हुए और अपनी सुरक्षा की परवाह किए बिना, दुश्मन के मोर्चे के बहुत पास जाकर मुश्किल काम को पूरा कर दिखाया।

इस प्रकार सूबेदार मेजर लाल बहादुर छेत्री ने उत्कृष्ट साहस और उच्चकोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

21. कैप्टन जसवंत प्रताप सिंह जदेजा (एस एस—30575), आर्मी आर्डनेंस कोर

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि: 13 अगस्त, 1984)

13 अगस्त, 1984 को कैप्टन जसवंत प्रताप सिंह जदेजा अपने मूल निवास स्थान मोरबी से दिल्ली आ रहे थे। जब ये वांकनेर रेलवे स्टेशन पर गाड़ी की प्रतीक्षा कर रहे थे तो इन्होंने दो व्यक्तियों को वांकनेर रेलवे स्टेशन पुलिस चौकी के सिपाही पर तलवार और लाठी से हमला करते हुए देखा। ये उस सिपाही के शरीर से काफी खून बहता देखकर उसे हमलावरों से बचाने के लिए दौड़े। इन्होंने तलवार सहित एक व्यक्ति को पकड़ लिया और उससे हथियार छीनने की कोशिश की। इसी बीच दूसरे अपराधी ने इन पर लाठी से प्रहार किया। जब इन्होंने एक हाथ से लाठी पकड़ने की कोशिश की तो तलवारधारी व्यक्ति इनकी पकड़ से छूट गया और भाग निकला। इन्होंने उसका पीछा किया और जब ये उस अपराधी को पकड़ने ही वाले थे तो वह वापस मुड़ गया और तलवार घुमानी शुरू कर दी। कैप्टन जदेजा उस अपराधी की तलवार छीनने में सफल हो गए और लोगों की मदद से अपराधी को पकड़ लिया। हाथापाई में तलवार से इनकी बाईं कनपटी में चोटें आईं और बाएं हाथ की उंगलियों में गहरे घाव हो गए। बाद में अपराधी पकड़ा गया।

इस प्रकार कैप्टन जसवंत प्रताप सिंह जदेजा ने अपने जीवन को संकट में डाल कर एक सिपाही का जीवन बचाने और एक कुख्यात अपराधी को पकड़ने में अनुकरणीय साहस का परिचय दिया।

22. 1543318 लांस नायक पूरन सिंह, (मरणोपरांत) इंजीनियर्स

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 22 अगस्त, 1984)

22 अगस्त, 1984 को लांस नायक पूरन सिंह, बैरागढ़ (भोपाल) में स्थित रेजिमेंट के लांस नायक बलविन्दर सिंह के घर कुछ दस्तावेज देने गया। वहां पहुंचने पर उन्होंने देखा कि लांस नायक बलविन्दर सिंह के घर आग लगी हुई है और उनकी पत्नी अपने बच्चों की जान बचाने के वास्ते मदद के लिए चिल्ला रही है। लांस नायक पूरन सिंह अपनी जान की परवाह किए बिना घर के अंदर गए और चारों ओर आग

की लपटें होने के बावजूद दो बच्चों को सुरक्षित बाहर निकाल लाए। बाहर आने के बाद उन्हें पता लगा कि साढ़े पांच साल का तीसरा बच्चा अभी अंदर ही है। इस समय तक मकान पूरी तरह आग में घिर चुका था। ऐसी विकट स्थिति में जान जोखिम में डालकर वे दुबारा अंदर गए और बच्चे को उठाकर उसे आग की लपटों के बीच से निकालते हुए बाहर ले आए। लेकिन दुर्भाग्यवश लांस नायक पूरन सिंह के कपड़ों ने आग पकड़ ली थी और वह बुरी तरह जल चुके थे। फिर भी, उन्होंने अदम्य साहस और प्रबल इच्छा शक्ति का परिचय देते हुए बच्चे को अपनी बाहों में उठाकर सैनिक अस्पताल की ओर दौड़ पड़े और अस्पताल में जाकर उन्होंने दम तोड़ दिया।

इस प्रकार लांस नायक पूरन सिंह ने उत्कृष्ट साहस, वीरता और असाधारण निस्वार्थ सेवा-भावना का परिचय देते हुए अपने जीवन का बलिदान दे दिया।

23. कैप्टन बहादुर सिंह बिष्ट (आई०सी०-36840), गोरखा राइफल्स

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 3 सितम्बर, 1984)

3 सितम्बर, 1984 को लगभग 2300 बजे कैप्टन बहादुर सिंह बिष्ट को विश्वसनीय सूचना मिली कि एक कट्टर विद्रोही, नागालैंड की नेशनल सोशलिस्ट काउंसिल के स्वयंभू कारपोरल जोसेफ असल, 4 सितम्बर, 1984 को सुबह शेरो गांव के पास मणिपुर नदी पार करने वाले हैं। कैप्टन बिष्ट ने उस स्थान पर, जहां से नदी पार की जा सकती थी, घात लगा कर मार करने वाली दो टुकड़ियों को वहां तैनात करने का फैसला किया। जहां से विद्रोही के आने की संभावना अधिक थी उस स्थान पर इन्होंने स्वयं निगरानी रखी। 4 सितम्बर, 1984 को जब 0445 बजे स्वयंभू कारपोरल जोसेफ असल निर्दिष्ट स्थान पर आया तो कैप्टन बिष्ट ने तत्काल उसे ललकारा। विद्रोही ने अपनी पिस्तौल निकाल ली और कैप्टन बिष्ट पर तीन गोलियां दाग दीं तथा भागने की कोशिश की। बड़ी निर्भीकता से कैप्टन बिष्ट ने उसका पीछा किया और हवलदार यम बहादुर वाल्मीत की सहायता से विद्रोही को झपट कर पकड़ लिया। उससे एक एम-20 चीनी पिस्तौल और 2 मैगजीन बरामद हुई।

इस प्रकार कैप्टन बहादुर सिंह बिष्ट ने अनुकरणीय साहस, नेतृत्व और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

24. फ्लाइट कैडेट मोहिन्दर जीत सिंह बैंस (172220), प्रशिक्षणाधीन, फ्लाइंग पायलट (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 8 सितम्बर, 1984)

8 सितम्बर, 1984 को जब फ्लाइट कैडेट मोहिन्दर जीत सिंह बैंस वायुसेना के प्रशिक्षण संस्थान में उच्च प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे थे, उन्हें अनुभवी पायलट के साथ समुद्र के ऊपर नीची उड़ान भरने का कार्य सौंपा गया। उड़ान भरने के तुरन्त बाद ही उन्होंने महसूस किया कि विमान के इंजन में आग लग गई है। फ्लाइट कैडेट बैंस ने एक इंजन वाले जेट विमान में, इस किस्म की बेहद नाजुक और खतरनाक स्थिति को भांप लिया और प्रशिक्षणाधीन पायलट होने और अपने सीमित अनुभव के बावजूद धैर्य नहीं छोड़ा तथा काफी शान्त बने रहे। वे जलते हुए विमान को घनी आबादी वाले इलाकों से दूर एक झील की ओर ले गए ताकि जमीन पर नागरिकों के जानमाल की क्षति न हो। इसके बाद, प्रशिक्षण के दौरान सीखी हुई ड्रिलें अपनाकर उन्होंने विमान की कैनोपी खोल दी और विमान के पहिए ऊपर करके विमान को झील की सतह पर उतार दिया। विमान झील के ऊपर रेंगने लगा और कोई तीन सौ मीटर की दूरी तय करके धीमा हो गया, फिर सामने वाले हिस्से के बल तीस फुट नीचे पानी में धंस गया। पानी के अंदर फ्लाइट कैडेट बैंस ने अपने आपको अपनी सीट और पैराशूट से अलग किया, आक्सीजन ट्यूब हटाई और कॉकपिट से बाहर निकल आए, लेकिन झील के अंदर की खर-पतवार में फंस गए। हालांकि अपने भीगे बूटों और ऊपर के कपड़ों के कारण वे काफी भारी हो गए थे फिर भी उन्होंने जबरदस्त कोशिश की और झील की सतह पर लगभग पहुंच ही चुके थे कि खर-पतवार ने उन्हें फिर से नीचे की ओर खींच लिया। उन्होंने अपने बूट उतारने की कोशिश की। अभी वे अपने एक ही बूट का फीता खोल पाए थे कि उनका दम घुटने लगा और वे पानी में डूब गए।

इस प्रकार फ्लाइट कैडेट मोहिन्दर जीत सिंह बैंस ने असीम धैर्य, साहस, सूझ-बूझ और उत्तरदायित्व की उच्च भावना का परिचय दिया।

25. पायलट अफसर राधा कृष्ण बालभद्र (17226-ए) उड़ान (पायलट)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 25 सितम्बर, 1984)

25 सितम्बर, 1984 को पायलट अफसर राधा कृष्ण बालभद्र को मिग वायुयान पर चौथी बार उड़ान भरने के लिए प्राधिकृत किया गया। उड़ान के दौरान 10 कि०मी० की ऊंचाई पर वायुयान का कैनोपी पर्सपेक्स टूट गया जिससे बारिश रोकने के शीशे और प्लास्टिक के टुकड़े उस पर आ गिरे। वायुयान की बायीं ओर केवल कैनोपी के अवशिष्ट रह गए। जबर्दस्त वायु-स्फोट की वजह से अफसर को आंख खोल कर आगे देखना भी मुश्किल हो गया। इसके साथ-साथ इन्होंने विस्फोट विसंपीडन का धक्का महसूस किया। पायलट अफसर बालभद्र ने ऐसे वायुयान की उड़ान का अल्प अनुभव होने के बावजूद अत्यन्त सतर्कता, विश्वास और धर्य बरतते हुए, आपातकाल में दुश्मन का मिल के क्षेत्र को पहचानते हुए तेजी से नीचे उतरे वायुयान के क्षतिग्रस्त होने की वजह से अपेक्षित अतिरिक्त गति और शक्ति का तालमेल रखते हुए जमीन पर उतरे।

इस प्रकार पायलट अफसर राधाकृष्ण बालभद्र ने साहस, आत्म विश्वास सूझ-बूझ और वायुयान उड़ाने की उच्चस्तरीय दक्षता का परिचय दिया।

26. कर्नल राम कृष्ण बंसल (डी सी -31300) आर्मी पोस्टल सर्विस कोर

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 1 नवम्बर, 1984)

पहली नवम्बर, 1984 को जब कर्नल राम कृष्ण बंसल ने रेल से अस्थायी ड्यूटी पर कलकत्ता जाते हुए देखा कि टुंडला और शिकोहाबाद स्टेशनों पर कुछ भीड़ एक समुदाय के लोगों, जिसमें उस समुदाय के सेना कार्मिक भी थे, की पिटाई और हत्या कर रही है। इन्होंने सारी रेल में गश्त लगाई और उस समुदाय के सभी लोगों को प्रथम श्रेणी और वातानुकूलित प्रथम श्रेणी के डिब्बे में ले आए। अपने जीवन को खतरे में डालते हुए ये स्वयं डिब्बे के दरवाजे पर खड़े हो गए और किसी शरारती तत्व को डिब्बे में नहीं घुसने दिया। इन्होंने इससे अगले स्टेशनों पर लोगों की सुरक्षा के लिए पर्याप्त पुलिस लगाने के लिए भी हिदायत दीं।

इस प्रकार कर्नल राम कृष्ण बंसल ने प्रबल शक्ति, साहस, सूझ-बूझ और उच्चकोटि की जन-हित भावना का परिचय दिया।

27. जे०सी०-87387 सूबेदार सखाराम दाजी खोट, मराठा लाइट इन्फैन्ट्री

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 1 नवम्बर, 1984)

पहली नवम्बर, 1984 को 1500 बजे सूचना मिली कि कबाड़ी बाजार के आस-पास कुछ लोग दंगा फसाद तथा मार-काट करने के इरादे से इकट्ठा हो गए हैं। वे समुदाय विशेष के घर में भी घुस गए थे। अतः उनकी तलाश करने के लिए जवानों की एक छोटी टुकड़ी घरों की तलाशी लेने के लिए भेजी गई। सूबेदार सखाराम दाजी खोट तीन अन्य रैंकों के साथ एक मकान में घुसे तो इन्हें लगभग

दस सशस्त्र दंगाइयों का सामना करना पड़ा। इन दंगाइयों ने एक समुदाय विशेष के पूरे परिवार को घेर रखा था और उसकी हत्या करने वाले थे। इन्होंने युद्ध का नारा लगाया और अपनी सुरक्षा की बिल्कुल परवाह न करते हुए गुंडों पर टूट पड़े। एक गुंडे ने अपनी रिवॉल्वर से इन पर गोली चलाई जो सौभाग्यवश सूबेदार खोट को नहीं लग पाई। इनके शौर्य का अनुकरण करते हुए इनके साथी भी गुंडों पर टूट पड़े और उन्हें अपने काबू में ले लिया। इस प्रकार एक परिवार के सदस्यों की जीवन रक्षा हो गई।

सूबेदार सखाराम दाजी खोत ने अपराधियों को पकड़ने में साहस और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

28. 220058 वारंट अफसर हरकंवल कृष्ण शर्मा, उपस्कर सहायक

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 1 नवम्बर, 1984)

पहली नवम्बर, 1984 को दंगाइयों से बुरी तरह प्रभावित पालम कालोनी के निवासी वारंट अफसर शर्मा ने अल्पसंख्यक समुदाय के बारह व्यक्तियों को अपने घर में शरण दी ताकि उनकी जान बचाई जा सके। वारंट अफसर शर्मा ने अपने परिवार के सदस्यों की जिन्दगी दांव पर लगा दी थी क्योंकि दंगाइयों को इस बात की भनक पड़ गई थी कि अल्पसंख्यक समुदाय के कुछ व्यक्ति उनके घर में छिपे हुए हैं। उन्होंने घर को घेर लिया और वारंट अफसर शर्मा को धमकी दी कि अगर इन्होंने शरण दिए गए लोगों को उनके हवाले नहीं किया तो इन्हें भयंकर परिणाम भुगतने पड़ेंगे। वारंट अफसर शर्मा ने शान्ति बनाए रखी और दंगाइयों को यह यकीन दिलाया कि इनके घर में किसी को भी शरण नहीं दी गई है। परन्तु वे वारंट अफसर शर्मा के जवाब से पूरी तरह संतुष्ट नहीं थे। उन्होंने इनके घर पर और उनकी सभी गतिविधियों पर नजर रखनी शुरू की। 2 नवम्बर, 1984 की रात को मौका मिलते ही वारंट अफसर शर्मा ने घर में छिपाए एक परिवार के छः सदस्यों की पहली टोली को सुरक्षित स्थान पर पहुंचा दिया। इससे पहले कि छः व्यक्तियों की दूसरी टोली को सुरक्षित जगह पर भेजा जा सके, दंगाइयों ने एक बार फिर घर को घेर लिया। वारंट अफसर शर्मा ने अपने जीवन को जोखिम में डालकर दंगाइयों को बहस में उलझाए रखा और किसी को घर में घुसने नहीं दिया। 48 घण्टे तक वारंट अफसर शर्मा का घर दंगाइयों से घिरा रहा और ये स्वयं उनका ध्यान बंटाने के लिए बाहर ही खड़े रहे। दो दिन बाद ये छः सदस्यों के दूसरे परिवार को भी सुरक्षित स्थान पर पहुंचाने में सफल हुए।

इस प्रकार वारंट अफसर हरकंवल कृष्ण शर्मा ने अत्यधिक प्रतिकूल परिस्थितियों में, अपने तथा अपने परिवार के सदस्यों के जीवन को खतरे में डालकर अनुकरणीय साहस और सूझ-बूझ का परिचय दिया।

29. जे०सी०–110918 सूबेदार हरेन्द्र सिंह नेगी, गढ़वाल राइफल्स

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 2 नवम्बर, 1984)

2 नवम्बर, 1984 को 7 गढ़वाल राइफल्स के सूबेदार हरेन्द्र सिंह नेगी दो अफसरों, तीन जूनियर कमीशन अफसरों और 2 सिविलियनों के साथ फ्रंटियर मेल में यात्रा कर रहे थे। जैसे ही गाड़ी मोदीनगर के नजदीक पहुंची, हिंसा पर आमादा भीड़ ने एक खास समुदाय के यात्रियों पर हमला करना शुरू कर दिया। अपनी जान की परवाह न करते हुए सूबेदार नेगी ने भीड़ को डिब्बे में घुसने से रोका। दिल्ली के यमुना पुल के निकट पहुंचने पर भीड़ ने एक बार फिर उस डिब्बे में बैठे यात्रियों पर हमला किया लेकिन इन्होंने भीड़ को डिब्बे में घुसने से रोकने के लिए डिब्बे के दोनों दरवाजों पर पहरा देने का फैसला किया। इन्होंने नायब सूबेदार माधोराम को आदेश दिया कि वह एक दरवाजे पर पहरा दें जबकि दूसरे दरवाजे पर ये स्वयं पहरा देने लगे। इन्होंने चिल्ला कर कहा कि डिब्बे के अन्दर सेना के अफसर यात्रा कर रहे हैं तथा खास समुदाय के किसी भी भाई को छूने से पहले भीड़ को उन्हें मारना होगा। अदम्य साहस का परिचय देकर इन्होंने उस डिब्बे में बैठे यात्रियों की जान बचाई।

इस प्रकार सूबेदार हरेन्द्र सिंह नेगी ने पहलशक्ति साहस और सूझ-बूझ का परिचय देते हुए मैत्री भावना से भरपूर सेना की उच्चतम परम्पराओं का अति सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत किया।

30 जे०सी०–130039 नायब सूबेदार माधू राम, जम्मू और कश्मीर राइफल्स

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 2 नवम्बर, 1984)

पहली नवम्बर, 1984 को नायब सूबेदार माधूराम, अस्थायी ड्यूटी पर जाते समय, अमृतसर से दिल्ली तक फ्रंटियर मेल में यात्रा कर रहे थे। उस डिब्बे में इनके साथ एक विशेष समुदाय के सात यात्री भी थे। 2 नवम्बर, 1984 को जब गाड़ी मोदीनगर पहुंची तो हिंसा पर उतारू भीड़ ने पत्थरों और लोहे की छड़ों से अनेक स्थानों पर गाड़ी पर हमला किया। अपनी जान की परवाह किए बिना नायब सूबेदार माधूराम ने बीच-बचाव करते हुए अपने सहयात्रियों की जान बचाने की भरपूर कोशिश की। एक बार तो वे भीड़ के नीचे दब गए थे लेकिन उन्होंने हिम्मत नहीं हारी और भीड़ को यह कहते हुए ललकारा कि डिब्बे में मेरे वरिष्ठ सहयोगी और देशवासी हैं अतः उन्हें किसी भी प्रकार का नुकसान पहुंचने से पहले मुझे मारना होगा। इस प्रकार ये उत्तेजित भीड़ को डिब्बे से हटाने में सफल हो गए। अपनी पूरी यात्रा के दौरान इन्होंने अनुकरणीय साहस और अपनी ड्यूटी से कहीं अधिक साम्प्रदायिक सौहार्द के लिए अपनी जान को दांव पर लगा दिया।

इस प्रकार नायब सूबेदार माधूराम ने अपने सहयात्रियों की जान बचाने के लिए अनुकरणीय साहस और सूझ-बूझ का परिचय दिया।

31. कैप्टन अजय कुमार दास (आई०सी०–39491), सिख

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 6 नवम्बर, 1984)

कैप्टन अजय कुमार दास मिजोरम में एक चौकी के कमांडर थे और इन्हें एक कुख्यात विद्रोही दल को पकड़ने का काम सौंपा गया था। यह दल वहां की स्थानीय जनता को आतंकित करने और तोड़ फोड़ की कार्रवाई कर रहा था। कैप्टन दास को इस दल के बारे में विश्वसनीय सूचना मिली और इन्होंने विद्रोहियों के छिपने के स्थान पर छापा मारने की एक ठोस योजना बनाई। वे 6 नवम्बर, 1984 को 0255 बजे बह तेज बहती नदी की उल्टी दिशा में नाव खेकर उस गिरोह के छिपने के स्थान पर पहुंचे। कैप्टन दास हमला करने वाली टुकड़ी का स्वयं नेतृत्व करते वे वहां पहुंचे तो विद्रोहियों ने इन पर गोलियां चला दी जिससे इनके दल का एक सदस्य गम्भीर रूप से घायल हो गया। वह तनिक भी विचलित नहीं हुए और उन्होंने अपनी सुरक्षा की परवाह न करते हुए गोलियों का जवाब गोलियों से दिया और अपने आदमियों को हमला जारी रखने का निर्देश दिया। अचानक एक विद्रोही झोपड़ी से कूद कर भाग निकलने की कोशिश करने लगा। परन्तु कैप्टन दास ने बड़े साहस और सूझ-बूझ से काम लेकर उसका पीछा किया और कड़े मुकाबले के बाद उसे पकड़ने में सफल हुए। वह विद्रोही, जो मुठभेड़ में घायल हो गया था तथा बाद में जिसकी मृत्यु हो गई स्वयंभू लेफ्टिनेंट मलस्वामा था।

इस प्रकार कैप्टन अजय कुमार दास ने उच्चकोटि की व्यावसायिक कुशलता, असाधारण वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

32. 3379219 सिपाही दलजीत सिंह, सिख

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 6 नवम्बर, 1984)

सिपाही दलजीत सिंह, कैप्टन ए० के० दास द्वारा संचालित गश्ती टोली के सदस्य थे जिसने 5/6 नवम्बर, 1984 की रात को मिजोरम के अति विद्रोहिता वाले क्षेत्र में हार टोकी चौकी के पास रूम हट पर धावा बोलना था। जब गश्ती टोली ने विद्रोहियों के छुपने की जगह पर हमला किया तो विद्रोहियों के सन्तरी ने फायर करना शुरू कर दिया और सिपाही दलजीत सिंह गोलियों द्वारा गम्भीर रूप से घायल हो गये।

गम्भीर घावों और एक आंख चली जाने के बावजूद सिपाही बलजीत सिंह अपने दल के साथ आगे बढ़ते चले गए और विद्रोहियों पर गोलीबारी की। स्वयंभू लेफ्टिनेंट मोसस्वामा और एक स्वयंभू प्राइवेट बान इम्याना को घायल कर उन्हें पकड़ने में अपने दल की बड़ी सक्रियता से मदद की। बाद में दोनों ही विद्रोहियों की गम्भीर घावों के कारण मृत्यु हो गई।

इस प्रकार सिपाही बलजीत सिंह ने उत्कृष्ट वीरता, साहस और उच्च-कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

33. जी–155130 वाहन मैकेनिक बलबीर सिंह, (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 12 दिसम्बर, 1984)

वाहन मैकेनिक बलबीर सिंह को 1984–85 की सर्दियों के प्रारम्भ में 18380 फुट की ऊंचाई पर स्थित खारडुंगला दर्रे पर बर्फ हटाने के काम पर लगाया गया था तथा उन्हें 17000 फुट तथा उससे अधिक ऊंचाई वाले स्थानों पर कार्यरत संयंत्रों, मशीनरी तथा गाड़ियों की मरम्मत का काम सौंपा गया था। 12 दिसम्बर, 1984 को, खार डुंगला चोटी पर काम करने वाला डोजर खराब हो गया और ग्लेशियर ब्रिज और 43वें किलोमीटर के बीच बर्फ हटाने का काम नहीं किया जा सकता था। खारडुंगला चोटी पर डोजर की मरम्मत करके इसे 43वें किलोमीटर की ओर ले जाना बहुत जरूरी हो गया था। इसके अलावा उस स्थल पर और दो डोजर मरम्मत के लिये पड़े हुए थे जिनकी तत्काल मरम्मत करना जरूरी था ताकि उन्हें बर्फ हटाने के काम में जल्दी से जल्दी लगाया जा सके। निरन्तर हिमपात हो रहा था, तापमान शून्य डिग्री के नीचे था तथा बर्फ का अन्धड़ चल रहा था। ऐसी परिस्थितियों में वाहन मैकेनिक बलबीर सिंह ने अथक परिश्रम करके 12 दिसम्बर, 1984 की शाम तक सभी डोजरों को ठीक कर दिया। मरम्मत के बाद डोजरों को निर्धारित स्थल की ओर ले जाते समय भारी हिमस्खलन हुआ जिसने उस गाड़ी को नीचे घाटी में गिरा दिया, जिसमें श्री बलबीर सिंह यात्रा कर रहे थे तथा बलबीर सिंह बर्फ के नीचे दब गये।

इस प्रकार वाहन मैकेनिक बलबीर सिंह ने सड़क साफ करने के लिये डोजरों की मरम्मत करने के काम में अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की बिल्कुल भी परवाह न करते हुए अनुकरणीय साहस तथा कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

34. जी–154885–एच० एम० टी० ड्राइवर कुंजकुंज पीताम्बरन् (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 12 दिसम्बर, 1984)

दिसम्बर 1984 में जी/154885–एच०, एम० टी० ड्राइवर, कुंजकुंज पीताम्बरन् लद्दाख में 18000 फुट तथा उससे अधिक की ऊंचाई पर खार डुंगला दर्रे के दोनों ओर अपने वाहन के साथ-साथ, बर्फ साफ करने वाले दलों को ले जाने के लिये तैनात किया गया। दर्रे पर भारी बर्फ गिरी थी तथा वहां बहुत तेज हवाएं और बर्फानी तूफान चलना आम बात थी। यह बहुत खतरे का काम था और इस प्रकार की प्रतिकूल मौसमी परिस्थितियों में दर्रे के आरपार वाहन को चलाने के लिए काफी हिम्मत की जरूरत थी।

12 दिसम्बर, 1984 को खार डुंगला दर्रे की उत्तरी ओर की सड़क बर्फ तथा अन्धड़ की वजह से बन्द हो गई। कुछ महत्वपूर्ण सामग्रियां उपस्कर को फौरन इस पार ले आना था। दुर्भाग्यवश, दर्रे के दूसरी तरफ काम कर रहे दोनों डोजर खराब हो गये थे और यह फैसला किया गया कि दक्षिण की ओर से स्मिट बर्फ काटने वाली मशीन तथा अतिरिक्त डोजर को ले जाया जाये। पार्टी एम० टी० ड्राइवर के० पीताम्बरन् द्वारा चलाये गये वाहन में 12 दिसम्बर, 1984 की शाम को खार डुंगला चोटी से चली। वहां बहुत ज्यादा बर्फ पड़ रही थी और सिर्फ कुछ ही मीटरों तक दिखाई दे रहा था। जैसे ही वाहन ने ग्लेशियर ब्रिज को पार किया वैसे ही वह फिसलने लगा तथा ऊर्ध्व मुखी ढलान पर नहीं चढ़ सका। वाहन को डोजर द्वारा खींचा गया। वाहन ने बर्फ की मोटी परत में से मुश्किल से 200 मीटर का फासला तय किया होगा कि पहाड़ी की तरफ से आती हुई एक विशाल हिम शिला ने कुछ ही सैकण्डों में वाहन को घाटी की तरफ धकेल दिया। वाहन तथा श्री कुंजकुंज पीताम्बरन् समेत उसमें बैठे सभी लोग बर्फ के नीचे दब गये। परिणामतः श्री कुंजकुंज पीताम्बरन का देहान्त हो गया।

इस प्रकार श्री कुंजकुंज पीताम्बरन् ने अपनी सुरक्षा की बिल्कुल परवाह न करते हुए अनुकरणीय साहस और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

35 जी/134679 एक्स आपरेटर एक्सकेवेटिंग मशीनरी वलापु योगय्या (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 30 दिसम्बर, 1984)

30/31 दिसम्बर, 1984 को मूसलाधार वर्षा के कारण राष्ट्रीय राजमार्ग (जम्मू श्री नगर), 159·9 किलोमीटर पर भू-स्खलन के कारण सड़क यातायात ठप्प हो गया था और दोनों ओर सैकड़ों गाड़ियां रुक गई थीं। आपरेटर वलापु योगय्या को डोजर से भू-स्खलन वाले स्थान को साफ करने का काम सौंपा गया। उन्होंने असाधारण साहस और कार्य कुशलता का परिचय देते हुए कम रोशनी में और ऊपर से गिरते हुए भारी शिलाखण्डों के बीच सड़क को साफ किया। अभी श्री वलापु योगय्या कार्य स्थल पर ही थे कि उसी सड़क पर एक और जगह पर भू-स्खलन हुआ जिसमें कुछ यात्री बसें फंस गईं। उच्चकोटि का साहस दिखाते हुए श्री वलापु योगय्या एक बार फिर अपने डोजर से भू-स्खलन को साफ करने में जुट गये। उसी समय पहाड़ी के ऊपर से एक विशाल शिलाखण्ड लुढ़कता हुआ आया और उनके सिर से टकराया जिससे वे डोजर सहित नीचे घाटी में जा गिरे और श्री वलापु योगय्या का तत्काल निधन हो गया।

इस प्रकार श्री वलापु योगय्या ने अपनी जान की परवाह किये बिना अनुकरणीय साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

36 9921842 सिपाही छेवांग दुन्डुप, लद्दाख स्काउट्स। (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 27 फरवरी, 1985)।

27 फरवरी, 1985, को सिपाही छेवांग दुन्डुप जब उत्तरी सेक्टर के अग्रवर्ती क्षेत्र में ड्यूटी पर तैनात थे तो विद्रोहियों ने उन पर भारी गोलीबारी शुरू कर दी। अपनी जान की परवाह किये बिना उन्होंने मोर्चा संभाला और विद्रोहियों पर जवाबी हमला शुरू कर दिया। इस कार्यवाही में वह बुरी तरह से जख्मी हो गये और अपने जीवन का बलिदान दे दिया।

इस प्रकार छेवांग दुन्डुप ने अनुकरणीय साहस, दृढ़ता और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

37. मेजर सुरेश कुमार गढ़होक (आई० सी०–32130), आर्टिलरी (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 30 अगस्त, 1985)।

30 अगस्त, 1985, को मेजर सुरेश कुमार गढ़होक ने जब उत्तरी सीमा के अग्रवर्ती क्षेत्र में टोह लेने के लिये हेलीकाप्टर से उड़ान भरी तो उस समय रोशनी बहुत कम थी और मौसम खराब था। उस उड़ान के दौरान विद्रोहियों ने हेलीकाप्टर पर गोलियों की बौछार शुरू कर दी जिससे मेजर गढ़होक बुरी तरह जख्मी हो गये। अपनी सीट पर डटे रह कर और विद्रोहियों की मशीनगन की गोलियां झेलते हुए मेजर गढ़होक ने अपनी मातृभूमि की सीमा की चौकसी करते हुए अपने प्राणों की आहूति दे दी।

इस प्रकार मेजर सुरेश कुमार गढ़होक ने उत्कृष्ट साहस, दृढ़ता और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

38 कैप्टन वीरेन्द्र सिंह गुलेरिया (आई० सी०-31042), आर्टिलरी

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 30 अगस्त, 1985)।

30 अगस्त, 1985 को कैप्टन वीरेन्द्र सिंह गुलेरिया ने जब उत्तरी सीमा के अग्रवर्ती क्षेत्र में टोह लेने के लिये हेलीकाप्टर से उड़ान भरी, उस समय रोशनी बहुत कम थी और मौसम भी खराब था। उस उड़ान के दौरान विद्रोहियों ने हेलीकाप्टर पर गोलियों की बौछार शुरू कर दी जिससे वह बुरी तरह क्षति ग्रस्त हो गया। कैप्टन गुलेरिया स्वयं जख्मी हो गये और उनका सह पायलट भी बुरी तरह घायल हो गया। ऐसी विकट स्थिति में भी ये क्षति ग्रस्त विमान को उड़ाते रहे ताकि बुरी तरह घायल सह पायलट को यथाशीघ्र चिकित्सा सहायता के लिये बेस कैम्प तक पहुंचाया जा सके।

इस प्रकार कैप्टन वीरेन्द्र सिंह गुलेरिया ने उत्कृष्ट साहस, कुशलता और उच्चकोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

सु० नीलकण्ठन,
राष्ट्रपति का उप सचिव

मंत्रिमण्डल सचिवालय

नई दिल्ली, दिनांक 27 फरवरी 1986

संकल्प

सं० ए-11019/2/86-प्रशा०-I—सरकार ने तत्काल प्रभाव से महासागर विज्ञान और प्रौद्योगिकी बोर्ड का गठन करने का निर्णय लिया है। बोर्ड निम्नलिखित के लिये उत्तरदायी होगा :—

(i) महासागर साधन स्रोतों के समन्वित व कुशल विकास एवं विदोहन हेतु एकीकृत प्रयास के उद्देश्य से महासागर संबंधी क्रियाकलाप में अन्तर विभागीय अन्तर मंत्रालयीय समन्वय के लिये केन्द्रीय भूमिका निभाना;

(ii) महासागर से संबंधित कार्यों के क्षेत्र में अनुसन्धान और प्रौद्योगिकी विकास हेतु एकीकृत कार्यक्रम को तैयार कराने में मार्गदर्शन देना;

(iii) विभिन्न मंत्रालयों/विभागों की महासागर से संबंधित नीतियों और कार्यक्रमों के कार्यान्वयन की आवधिक समीक्षा, परिवीक्षण और मूल्यांकन करते रहना; तथा

(iv) महासागर साधन स्रोतों के एकीकृत एवं समग्र विदोहन हेतु समुचित भावी नीति विकल्प और दीर्घावधिक नीतियां तैयार करना।

2. उपर्युक्त जिम्मेदारियों और कार्यों के निर्वहन हेतु बोर्ड:—

(क) विद्यमान नीतियों के गलत और अनुचित पहलुओं का और उनकी मात्रा का पता लगाकर उनके विकल्प सुझायेगा;

(ख) महासागर से संबंधित क्रियाकलापों के एकीकृत विकास के भाग के रूप में नीति निर्देशों और वास्तविक कार्यक्रमों एवं प्राथमिकता दी जाने वाली परियोजनाओं के सम्बन्ध में संबंधित मंत्रालयों/विभागों को सिफारिश करेगा।

गठन

3. बोर्ड में निम्नलिखित सम्मिलित होंगे:—

1. सचिव, महासागर विकास विभाग	अध्यक्ष
2. सचिव, विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग	सदस्य
3. सचिव, पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय	सदस्य
4. महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद	सदस्य
5. रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार	सदस्य
6. सचिव, खान विभाग	सदस्य
7. डा० एच० एन० सिद्दीकी	सदस्य
8. प्रो० बी० एस० राजू	सदस्य
9. डा० एस० कृष्णस्वामी	सदस्य

4. प्रारम्भ में बोर्ड का कार्यकाल तीन वर्ष का अर्थात् 31 मार्च, 1989 तक होगा।

बोर्ड को स्थान व सेवायें महासागर विकास विभाग प्रदान करेगा और विभाग का एक संयुक्त सचिव बोर्ड के सचिव का कार्य सम्पादन करेगा।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि संकल्प को भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाये।

यह आदेश भी दिया जाता है कि संकल्प की प्रति सरकार के मंत्रालयों/विभागों और अन्य सभी सम्बन्धों को प्रेषित की जाये।

अनिल कुमार, संयुक्त सचिव

विधि और न्याय मंत्रालय

(विधि कार्य विभाग)

नई दिल्ली, दिनांक 17 फरवरी 1986

संकल्प

सं० एफ०-8(14)/82-आई० सी०—विधि व्यवसाय के सदस्यों की सामाजिक सुरक्षा के उपाय के लिये उपबन्ध करने के लिये सिफारिश करने और छह मास की अवधि के भीतर रिपोर्ट प्रस्तुत करने के लिये तारीख 4-7-1985 के संकल्प द्वारा न्यायमूर्ति श्री बहरुल इस्लाम, संसद सदस्य, राज्य सभा की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया गया था।

2. छह मास की उक्त अवधि 22 फरवरी, 1986 को समाप्त हो जायेगी।

3. सरकार को यह सूचित कर दिया गया है कि समिति, उक्त अवधि के भीतर, अपना विचार विमर्श पूरा नहीं कर पायेगी और वह अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करने में सम्मर्थ है और यह कि पूर्वोक्त अवधि को चार मास के लिये बढ़ा दिया जाये।

अतः यह संकल्प किया गया है कि उक्त समिति द्वारा रिपोर्ट प्रस्तुत किये जाने के लिये समय को, पूर्वोक्त तारीख से, चार मास के लिये बढ़ा दिया जाये।

आदेश

यह आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प को सर्वसाधारण की जानकारी के लिये भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाये।

पी० के० कर्मा, सचिव

विदेश मंत्रालय

(हज सैल)

नई दिल्ली, दिनांक 19 फरवरी, 1986

संकल्प

सं० एम० (हज) 118-1/23/85—वर्ष 1986-87 के लिये भारत सरकार, निम्नलिखित सदस्यों के साथ, केन्द्रीय हज सलाहकार बोर्ड का पुनर्गठन करती है :—

1. अध्यक्ष, आन्ध्र प्रदेश राज्य हज समिति	पदेन
2. अध्यक्ष, असम राज्य हज समिति	पदेन

3. अध्यक्ष, गुजरात राज्य हज समिति पदेन
4. अध्यक्ष, बिहार राज्य हज समिति पदेन
5. अध्यक्ष, जम्मू एवं काश्मीर राज्य हज समिति पदेन
6. अध्यक्ष, मध्य प्रदेश राज्य हज समिति पदेन
7. अध्यक्ष, दिल्ली राज्य हज समिति पदेन
8. अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश हज समिति पदेन
9. अध्यक्ष, तमिलनाडु राज्य हज समिति पदेन
10. अध्यक्ष, कर्नाटक राज्य हज समिति पदेन
11. अध्यक्ष, पश्चिम बंगाल राज्य हज समिति पदेन
12. अध्यक्ष, हज समिति, लक्षद्वीप संघ शासित प्रदेश पदेन
13. अध्यक्ष, हज समिति, अण्डमान और निकोबार द्वीप समूह के संघ शासित प्रदेश पदेन
14. अध्यक्ष, हज समिति, पाण्डिचेरी संघ शासित प्रदेश पदेन
15. अध्यक्ष, पंजाब राज्य हज समिति पदेन
16. अध्यक्ष, राजस्थान राज्य हज समिति पदेन
17. अध्यक्ष, केरल राज्य हज समिति पदेन
18. अध्यक्ष, त्रिपुरा राज्य हज समिति पदेन
19. डा० रिजवान हैरिस, बम्बई
20. श्री अहमद पटेल, संसद सदस्य
21. प्रोफेसर फारूखी, जामिया मिलिया, नई दिल्ली
22. श्री इब्राहीम सुलेमान सेठ, संसद सदस्य
23. श्री मोहम्मद अमीन खण्डवानी, अध्यक्ष, हज समिति, बम्बई
24. श्री अब्दुल रहमान खान निश्तर, भूतपूर्व मंत्री, उत्तर प्रदेश
25. श्री समाली नबी, विधान सभा सदस्य, बिहार
26. श्री सुल्तान यार खान, एडवोकेट, दिल्ली
27. श्री चांद मोहम्मद, असम
28. श्री एम० ए० अजीज, आन्ध्र प्रदेश
29. डा० यू० मोहम्मद, मद्रास
30. श्री पी० के० अब्दुल्ला, आई० ए० एस० (सेवा निवृत्त), त्रिवेंद्रम
31. शहजादा शब्बीर भाई साहेब नुरुद्दीन, बम्बई।
32. मौलाना मसूद-उर-रहमान, मोहतमीन, दारुल उलीम, देवबन्द, उत्तर प्रदेश।
33. मौलाना मोहम्मद सालेह, उत्तर प्रदेश।
34. श्री शमीम अहमद, उत्तर प्रदेश।
35. श्री मोहीदिन सलाती, सफकदल, श्रीनगर।

2. विदेश मंत्रालय में हज मामलों के प्रमुख संयुक्त सचिव इस बोर्ड के पदेन सचिव और संयोजक होंगे।

3. बोर्ड भारत सरकार के हज और जियारत से सम्बद्ध मामलों पर सलाह देगा जैसा कि वह अब तक करता रहा है।

आदेश

भारत सरकार के सभी मंत्रालयों, राष्ट्रपति सचिवालय, उप राष्ट्रपति सचिवालय, प्रधान मंत्री कार्यालय, मंत्रिमण्डल सचिवालय, संसदीय कार्य विभाग, लोक सभा और राज्य सभा सचिवालय, सभी राज्य सरकारों, केन्द्र शासित प्रदेशों, हज समिति, बम्बई, सभी राज्यों की हज समितियों और मैसर्स मुगल लाइन लिमिटेड के सूचनार्थ इस संकल्प की एक-एक प्रति प्रेषित करने का आदेश दिया जाता है।

भारत के राजपत्र में इस संकल्प को प्रकाशित करने का भी आदेश दिया जाता है।

आरिफ़ कमरैन, संयुक्त सचिव, (अफ्रीका/हज)

श्रम मंत्रालय

नई दिल्ली, दिनांक 25 फरवरी 1986

सं० क्यू०-16011/1/86-डब्ल्यू० ई०—केन्द्रीय श्रमिक शिक्षा बोर्ड के नियम और विनियम के नियम 4(ii) के साथ पठित नियम 3 क के अनुसरण में, भारत सरकार सर्वश्री के० एम० वैदयन, संयुक्त सचिव, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, आर० एन० श्रीवास्तव, निदेशक, सार्वजनिक उद्यम संसत शिक्षा केन्द्र, नई दिल्ली और राय सिंह, महा निदेशक और कार्यकारी महानिदेशक राष्ट्रीय सहकारी प्रशिक्षण परिषद नई दिल्ली को, अपने-अपने मंत्रालय/संस्थानों का प्रतिनिधित्व करने हेतु, 24 अक्तूबर, 1985 से एक वर्ष की अवधि के लिये केन्द्रीय श्रमिक शिक्षा बोर्ड में सहयोजित सदस्यों के रूप में नियुक्त करती है।

चित्रा चोपड़ा, निदेशक

PRESIDENT'S SECRETARIAT

New Delhi, the 6th March 1986

No. 23-Pres/86.—The President is pleased to award the Police Medal for gallantry to the undermentioned officer of the Uttar Pradesh Police :—

Name and rank of the officer

Shri Jai Karan Singh,
Sub-Inspector of Police,
Etawah (U.P.)

Statement of services for which the decoration has been awarded.

On the 27th February, 1983, an information was received about the presence of dacoit gang of Babu alongwith a kidnapped child in the ravines of village Bela. Shri Jai Karan Singh, Sub-Inspector of Police decided to round up the gang with the limited force consisting of 3 other Sub-Inspectors, 1 Coy. Commander of PAC, 8 Constables and 1½ Section of PAC men. He divided the force into three groups to cover three different flanks. He was incharge of the first party, and the informer took this party near the spot, where the gang was resting. Shri Jai Karan Singh crawled and found the gang resting in the low ground. He quietly collected his group and positioned himself on a high mound from where he could spot the gang. He challenged them to surrender to the Police. Instead, the dacoits fired shots towards him, but he escaped unhurt. He immediately climbed high over the edge of the mound and opened fire on the dacoits. The distance between the Police party and dacoits was barely 35 yards. Shri Jai Karan Singh also signalled to other Police parties. The leader of the second party responded to the signal and started firing on the gang from the Northern side, while the first party kept the Eastern and North-Eastern sides covered. The third party fired on the gang from the Western side. There was a fierce gun battle between the Police parties and the dacoit gang. The firing continued for one and a half hours and as the morning grew brighter, the Police party heard cries from a nullah. It was the kidnapped child shouting to the Police party to stop fire as all the seven members of the gang had been shot and killed. Thus the entire gang of the dacoit Babu was liquidated. The kidnapped child was also recued by the Police. Three factory made guns, two .315 bore rifles and one CM. .12 bore gun alongwith 75 fired catridges and 20 rounds were recovered from the scene of occurrence.

In this encounter, Shri Jai Karan Singh, Sub-Inspector of Police, displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under rule 4(i) of the rules governing the award of the Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under rule 5, with effect from the 27th February, 1983

No. 24-Pres/86.—The President is plesaed to award the Police Medal for gallantry to the undermentioned officers of the Tamil Nadu Police :—

Names and rank of the officers

Shri Walter Issac Davaram,
Deputy Inspector General of Police.

Shri R. N. Purushothaman,
Inspector of Police.

Shri K. N. Sudhakaran,
Sub-Inspector of Police.

Shri S. Panneerselvam
Sub-Inspector of Police.

Shri Ashok Kumar,
Sub-Inspector of Police.

Statement of srevices for which the decoration has been awarded.

On the 23rd August, 1981, an information was received that a gang of armed anti-social elements responsible for various crimes was seen in the Nayakkaneri Hills, North Arcot District. Immediately Shri Walter Issac Davaram, Dy. Inspector, General of Police, with a Police party consisting of one Inspector, three Sub-Inspectors, six constables and two LNKs, proceeded towards the spot. When the Police jeeps were about 3.5 kms from Ambur, Shri Davaram noticed that the road was blocked by boulders. Suspecting foul play, he directed the occupants to jump down and take cover. As soon as the Police party stopped, the front jeep came under heavy gun fire. Due to pitch dark in the night, it was not possible to judge the gang's position and strength. However, making use of the flashes from assailant's guns, he roughly assessed the position and directed Inspector R. N. Purushothaman and Sub-Inspectors S. Panneerselvam and K. N. Sudhakaran to take position and keep firing at the assailants to prevent their escape in the left side of the ambush point. Followed by Sub-Inspector Ashok Kumar, he himself took position on the right flank. In addition to firing, the assailants also hurled country-made bombs from behind the barricade of boulders. The gun battle lasted for about half-an-hour. The assailants, however, escaped during the shoot-out, leaving three of their dead colleagues behind. The Police party was able to capture one foreign made semi-automatic pistol, one SBBL gun and one SBML gun, two other guns, several spent shells, a large quantity of gun powder and cartridges.

In this encounter, Shri Walter Issac Davaram, Deputy Inspector General of Police, Shri R. N. Purushothaman, Inspector, Shri K. N. Sudhakaran, Sub-Inspector, Shri S. Panneerselvam, Sub-Inspector and Shri Ashok Kumar, Sub-Inspector displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under rule 4(i) of the rules governing the award of the Police Medal and consequently carry with them the special allowance admissible under rule 5, with effect from the 23rd August, 1981.

The 26th January 1986

No. 25-Pres/86.—The President is pleased to approve the award of the 'Param Vishisht Seva Medal' to the undermentioned personnel for distinguished service of the most exceptional order :—

1. Lieutenant General Ashoka Kumar Handoo (IC-4502), Infantry.
2. Lieutenant General Kul Bhushan Mehta (IC-4509), Infantry.
3. Lieutenant General Prem Nath Hoon (IC-4591), AVSM, SM, Infantry.
4. Lieutenant General Palakkal Erasa Menon (IC-4831), Artillery.
5. Lieutenant General Jageshwar Nath Singh (IC-4518), Army Service Corps.
6. Lieutenant General Sushil Kumar (IC-4012), Electrical and Mechanical Engineers.
7. Lieutenant General Ratton Kumar Dhawan (IC-3968), Engineers.
8. Lieutenant General Jitinder Sud (IC-4116), Artillery.
9. Lieutenant General Vishwa Nath Sharma (IC-4769), AVSM, Armoured Corps.
10. Lieutenant General Bharat Bhushan Sehgal (IC-5304), Infantry.
11. Vice Admiral Gulab Mohanlal Hiranandani, AVSM, NM (00123 B).
12. Vice Admiral Sukhmal Jain, AVSM, NM (00130 W).
13. Vice Admiral Lajpat Rai Mehta, AVSM (50011 K).
14. Air Marshal Ripu Daman Sahni, AVSM (3867), Flying (Pilot).
15. Air Marshal Vir Narain (4007), Flying (Navigator).
16. Air Marshal Man Mohan Singh, AVSM, Vr. C (4023), Flying (Pilot).
17. Air Marshal Kuldip Singh Bhatia, AVSM & Bar (4139), Aeronautical Engineering (Electronics).
18. Major General Krishan Kumar Sudan (IC-5144), Artillery.
19. Major General Kurtar Singh Gill (IC-5956), Artillery.
20. Major General Anthony Cajetan D'Silva (IC-5993), Artillery.
21. Major General Shiv Kumar Sharma (IC-6416), Infantry.
22. Major General Bachittar Singh (IC-5113), Infantry.
23. Major General Yogendra Singh Tomar (IC-6615), Infantry.
24. Major General Satya Pal Sethi (IC-5321), AVSM, Signals.
25. Major General Vijay Kumar Sood (IC-6636), AVSM, Infantry.
26. Major General Prabhakar Kashinath Joglekar (IC-5343), Signals.
27. Major General Surindur Kumar (IC-6631), Army Service Corps.
28. Major General Harbhajan Singh (MR-783), Army Medical Corps.
29. Air Vice Marshal Chotey Lal Gupta (5027), Accounts.

No. 26-Pres/86.—The President is pleased to approve the award of the 'Ati Vishisht Seva Medal' to the undermentioned personnel for distinguished service of an exceptional order :—

1. Major General Shri Prakash Mani Tripathi (IC-7349), Armoured Corps.
2. Major General Nagappa Subba Rao (IC-7240), Electrical and Mechanical Engineers.
3. Major General Man Mohan Rai (IC-6114), Engineers.
4. Major General Kanaiyalal Manishankar Upadhyay (IC-6019), Signals.
5. Major General Surinder Kumar Anand (IC-31262), APSC.
6. Major General Madhavan Nair Kesavan Nair (IC-7508), Electrical and Mechanical Engineers.
7. Major General Mohammed Ahmed Zaki (IC-7613), Vr. C, Maratha LI.
8. Major General Dhirendra Dutt Saklani (IC-7779), Infantry.
9. Major General Rajinder Singh Chowdhary (IC-5126), Intelligence Corps (Retired).
10. Rear Admiral Jagat Narayan Sukul (50027 Y).
11. Rear Admiral Ran Vijai Singh (00158 H).
12. Rear Admiral Arun Auditto, NM (00176 Z).
13. Air Vice Marshal Gursharan Singh, VM, VSM (4263), Aeronautical Engineering (Mechanical).
14. Air Vice Marshal Pathathil Venugopal (4431), Flying (Pilot).
15. Air Vice Marshal Didar Singh Sabhikhi (4393), Flying (Navigator).

16. Air Vice Marshal Girish Krishnalal Desai (4468), Logistics.
17. Air Vice Marshal Sreedhara Lakshminarayanan (5565), Meteorological (Retired).
18. Brigadier Shantanu Kumar Dey (IC-6106), Armoured Corps.
19. Brigadier Krishan Kumar Malhotra (IC-7086), Engineers.
20. Brigadier Daya Nand Khurana (IC-7027), Signals.
21. Brigadier Santosh Gopal Mookerjee (IC-7071), VSM, Signals.
22. Brigadier Bal Krishan Gulati (IC-7822), Artillery.
23. Brigadier Shrikrishan Chidamber Sardeshpande (IC-7899), VSM, Infantry.
24. Brigadier Harish Kumar Kapoor (IC-8236), Artillery.
25. Brigadier Rajendra Pal Singh (IC-8114), VSM, Infantry.
26. Brigadier Gurdeep Singh (IC-8593), Infantry.
27. Brigadier Ranbir Singh (IC-8621), Vr. C, Infantry.
28. Brigadier Katankott Chandrasekharan (IC-11723), Engineers.
29. Brigadier Jatinder Kumar Puri (IC-10133), Infantry.
30. Brigadier Jawahar Lal Malhotra (IC-10109), VSM, Mech Infantry.
31. Brigadier Navin Kanwal Mayne (IC-10162), Infantry.
32. Brigadier Prabodh Chander Puri (IC-10441), VSM, Infantry.
33. Brigadier Ved Prakash Malik (IC-11537), Infantry.
34. Brigadier Avtar Singh Bains (IC-11688), Infantry.
35. Brigadier Narender Kumar Kapur (IC-11536), Infantry.
36. Brigadier Satish Chander Kashyap (IC-11691), Infantry.
37. Brigadier Birinder Kumar Chhibber (IC-11901), VSM, Infantry.
38. Brigadier Maramana Parameswaran Govindan Kutty Menon (IC-21009), JAG's Department.
39. Brigadier Trilochan Singh Chowdhary (IC-8208), Signals.
40. Brigadier Manjit Singh Sawhney (IC-12188), Armoured Corps.
41. Brigadier Yashwant Rai Sachdev (MR-873), Army Medical Corps.
42. Commodore Bharat Bhushan, NM (40069 R).
43. Commodore Sudershan Kumar Chand (00316 T).
44. Commodore Vishnu Bhagwat (00387 B).
45. Commodore Prithvi Raj Vij (70037 Z).
46. Air Commodore Denzil Keelor, KC, Vr. C (4805), Flying (Pilot).
47. Air Commodore Surjit Singh Malhotra, VM (4831), Flying (Pilot).
48. Air Commodore Uttam Khushalani (4959), Aeronautical Engineering (Mechanical).
49. Air Commodore Ran Vir Kumar (5264), Accounts.
50. Colonel Bhupinder Jit Singh Oberoi (IC-12877), Artillery.
51. Colonel Devinder Nath Wadhera (DR-10090), Army Dental Corps.
52. Colonel Basant Singh (IC-6817), Infantry (Retired).
53. Captain Inderjit Bedi (00327 T).
54. Surgeon Captain Narayan Prasad Mukherjee (75065 A).
55. Group Captain Syed Mohammed Osama (5690), Medical.
56. Group Captain Avinash Chander Goel (6503), Flying (Pilot).

No. 27-Pres./86.—The President is pleased to approve award of the Bar to Ati Vishisht Seva Medal to the undermentioned personnel for distinguished service of an exceptional order :—

1. Major General Ravinder Gupta (IC-5344), AVSM, Army Service Corps (Retired).
2. Brigadier Harish Chandra Joshi (IC-7637), AVSM, Infantry.

No. 28-Pres./86.—The President is pleased to approve the award of 'Kirti Chakra' to the undermentioned persons for acts of conspicuous gallantry :—

1. SHRI BUNDU KHAN, (Posthumous)
YAMUNA VIHAR,
DELHI

(Effective date of the award : 31st March, 1984)

On the 31st March, 1984, at about 12.30 P.M., 5 armed desperadoes entered the house of one Shri I. C. Goel in Yamuna Vihar, Delhi. They asked Shri Goel who was present in the drawing room, to hand over all the valuables. But Shri Goel grabbled with one of the desperadoes and the desperadoes beat him mercilessly. On hearing cries for help from Shri Goel's daughter, people of the area gathered and chased the desperadoes. In the meantime, the Police reached the spot and followed the culprits.

Shri Bundu Khan, a devoted social worker of the area, also gave a chase. One of the criminals, on reaching 'D' Block, Kokal Puri, took a turn and threatened the members of the public and the Police following him. Undaunted by his threats, Shri Bundu Khan jumped forward in a bid to catch the criminal, Mohd. Ahsan. The criminal, sensing danger, fired a shot which hit Shri Bundu Khan in the head and he ultimately succumbed to his injuries in the hospital the same day. The criminal, Mohd. Ahsan, was given chase by Assistant Sub-Inspector Chander Pal Singh and was ultimately arrested. His questioning led to the arrest of three more accused.

Shri Bundu Khan thus exhibited conspicuous courage and a high sense of public duty which led to the arrest of noted criminals.

2. 152779 RIFLEMAN GOPAL CHAND,
15 ASSAM RIFLES.
(Posthumous)

(Effective date of the award : 2nd December, 1984)

On the 2nd December 1984, Rifleman Gopal Chand was the leading scout of a special patrol, sent to destroy Naga Hostiles in position on a track to a Border Post. The Naga Hostiles had fortified the two cliffs in the Border Post area and had laid an ambush about 1100 yards ahead. They had laid a mine on the track and covered all approaches with automatic weapons. As Rifleman Gopal Chand reached the ambush site, a hail of bullets was directed on the patrol. With utter disregard to his own safety, Rifleman Gopal Chand charged on the hostiles. While doing so, he stopped over a mine and as a result both of his legs were blown off. With his gallant fighting spirit, he dragged himself, in spite of the profuse bleeding from his legs and kept on firing at the hostiles to prevent them from coming down from the ambush site and imperil his patrol party. He continued his gallant fight to the last.

Rifleman Gopal Chand thus displayed conspicuous bravery, indomitable courage, tremendous determination, devotion to duty of an exceptionally high order and laid down his life in the best traditions of the Army.

3. MAJOR JAI BAHUGUNA (IC-25182) SM, VSM, ENGINEERS

(Posthumous)

(Effective date of the award: 7th October, 1985)

Major Jai Bahuguna was the Deputy Leader of the Army Everest Expedition 1985. He was responsible for opening the route between Camp I and Camp II, which he accomplished in a record time of 1½ days. He thereafter established route opening for Camps III and IV in three days between 20th—23rd September, 1985. This enabled the expedition to move at a rapid speed.

Major Bahuguna was the leader of Second Summit party which was to provide support to the first Summit party on the 7th October 1985 during their attempt on Mount Everest. He controlled the situation on South Col on the 7th October 1985 when in an unfortunate accident Major Kiren Inder Kumar slipped and died. Major Bahuguna attempted to bring down the sick comrades and other members from South Col on 8th, 9th and 10th October 1985 in very adverse weather conditions in the Everest region, but did not succeed. He refused advice to descend to lower camps and stayed with his sick rope-mates till he himself succumbed to the vagaries of the atmosphere on 11th October, 1985.

Major Jai Bahuguna thus displayed conspicuous gallantry, leadership, esprit-de Corps and commaraderie in this act of supreme sacrifice.

4. 1258936 HAVILDAR INDRA BAHADUR GURUNG, ARTILLERY.

(Effective date of the award : 11th October, 1985)

Havildar Indra Bahadur Gurung was one of the lead climbers of the Army Every Expedition 1985. He was a member of summit teams that reached South Summit 28,700 feet and Summit camp 27,600 feet on difficult days. He was responsible for breaking trail all the way from Camp to South Col on the 11th October 1985, where he finally reached his comrades in one of the most daring, difficult and tiring conditions in extremely bad weather and snow blizzard. He tried to rescue Lieutenant MUB Rao during the evening hours from South Col but inspite of his best efforts, the officer died.

Havildar Indra Bahadur Gurung thus displayed conspicuous gallantry and courage of a very high order.

No. 29-Pres./86.—The President is pleased to approve the award of 'Shaurya Chakra' to the undermentioned persons for acts of gallantry :—

1. SHRI PARAM SINGH THAKUR, MADHYA PRADESH.

(Effective date of the award : 3rd June, 1982)

On the 3rd June, 1982, at about 10.30 P.M., an armed gang of eight dacoits raided the house of Shri Param Singh in village Kothora, District Sagar, Madhya Pradesh. Shri Param Singh, who was not present at that time, rushed to the house on hearing about the raid from his brothers and neighbours. He found one of the dacoits menacingly standing guard in front of the house. Inspite of the warnings from the dacoit, Shri Param Singh faced the dacoit with a mere lathi. The dacoit fired from his gun. Shri Param Singh ducked and moved onward exhorting his men to pursue the dacoits. This bold challenge unnerved the dacoits and they emerged out of the house and started running. The villagers led by Shri Param Singh pursued them.

One of the dacoits fired a second round toward Shri Param Singh. A pellet hit him in the knee which started bleeding profusely and rendered him almost immovable. Before the dacoit could charge again Shri Param Singh gave a decisive lathi blow on the dacoits head and in quick succession gave a blow on the head of another dacoit who was holding a torch light thus plunging the scene into total darkness Shri Param Singh disarmed another dacoit with a stunning lathi blow. This completely demoralised the dacoits who made good their escape. One injured dacoit with a gun and a strap of cartridges was caught, but later he succumbed to his injuries.

Shri Param Singh thus showed great presence of mind, courage and gallantry in facing eight armed dacoits unmindful of the risk involved to his own life.

2. G/108767 OPERATOR EXCAVATING MACHINERY ZALAM SINGH,

(Effective date of the award : 19th February, 1984)

In February, 1984, heaviest snow fall of the last two decades occurred and snow upto 8 to 10 feet got accumulated on Jammu Kashmir National Highway and consequently on 19th February, 1984, Kashmir Valley was cut off from rest of the country. Operator Excavating Machinery Zalam Singh was detailed for snow clearance on the National Highway with two other snow clearing Rolba machines under the supervision of Shri Satendra Kumar. While he was doing the snow clearance on the 19th February, 1984 at 1130 hours, two forward snow clearance machines got buried under heavy snow avalanche. Shri Zalam Singh gathered courage, walked through chest deep snow upto buried Rolbas and extricated his incharge and two other operator from under the snow. With the only machine left, he continued snow clearance operation, encountering numerous active avalanches, hostile weather high velocity winds with drift snow of 90—100 kmph and temperature of minus 9°C and succeeded in clearing the road for traffic upto South Jawar Tunnel on 23rd February, 1984.

Shri Zalam Singh thus, displayed courage and devotion to duty of a high order under exceptionally hostile weather conditions.

3. FLIGHT LIEUTENANT SATISH PURSHOTTAM APARAJIT (14069), ACCOUNT

(Effective date of the award 28th February, 1984)

Flight Lieutenant Satish Purshottam Aparajit was a member of the successful Trans-Himalayan Motor Expedition. The expedition drove through frozen wastes, ravine deserts at high altitude and over 15 mountain passes facing hostile winds lashing against the rocky terrain in sub-zero temperatures, avalanches and storms. On the 28th February, 1984, one of the vehicles of the expedition met with an accident and fell down a cliff of over 1,000 metre. Flt Lt Aparajit descended for rescue by using rapelling rope down a vertical rock face into the ravine covered with thick undergrowth to carry out search for the casualties. He was able to find one of the members who had suffered multiple fractures. After having given him mouth to mouth respiration, he quickly brought a doctor to him for rendering medical aid. Thereafter he brought up the wounded member of the team on his back most of the way. When he was climbing the last vertical rock, the anchor of the rope gave way and he slipped more than 100 feet but was lucky to survive. He held on to the wounded member of his team with great determination and brought him safely to the roadhead.

Flight Lieutenant Satish Purshottam Aparajit thus displayed indomitable courage, team spirit and sense of selfless service.

4. 40444969 COMPANY HAVILDAR MAJOR PRATAP SINGH, GARHWAL RIFLES.

(Effective date of the award : 8th March, 1984).

On the 8th March, 1984, during an operation launched to intercept infiltrating groups of Mizo National Front Hostiles attempting to enter Mizoram from Bangladesh, Company Havildar Major Pratap Singh of a special patrol was asked to carry out search and destroy the mission. Displaying tremendous determination, he reconnoitered the thickly forested mountainous area. He led his patrol over the most inhospitable terrain for seven days to trace movements of hostiles and thereafter selected an ideal ambush site to achieve total surprise. On 19th March, 1984, his perseverance bore fruit when three hostiles entered the ambush site. On being challenged, the leading hostile opened fire on Company Havildar Major Pratap Singh with a semi-automatic rifle. Undeterred by the fire, he signalled his patrol to open fire. Firing from his own Machine Carbine, he shot dead the leader of the group. Inspired by his leadership, the reserve group of his patrol went in pursuit of the other two fleeing hostiles, who were shot dead in the encounter. One semi-automatic rifle, one pistol, one grenade and 75 rounds of ammunition were recovered in this action.

Havildar Major Pratap Singh thus displayed conspicuous gallantry, professional competence and devotion to duty of a high order.

5. G/85328 OPERATOR EXCAVATING MACHINERY GOVIND RAM. (*Posthumous*)

(Effective date of the award : 8th March, 1984).

Operator Excavating Machinery Govind Ram was deployed with his dozer for formation cutting task on a hill road 'Gull' to 'Mohar' in Jammu and Kashmir. On the 8th March, 1984, at 1630 hours, when he was steering the dozer to a safe place after the days hard work, a sudden move of earth from top of the hill was noticed by him. Unconcerned about his personal safety, he kept steering the dozer from sliding down the valley. In the process, he came under the falling debris and died.

Shri Govind Ram thus displayed operational excellent skill, courage, great determination and devotion to duty of a high order.

6.Kumari Savita Goel,
Yamuna Vihar,
Delhi.

(Effective date of the award : 31st March, 1984).

On the 31st March, 1984, at about 12.30 p.m., five armed desperadoes entered the house of one Shri I. C. Goel in Yamuna Vihar, Delhi. Two of them carried loaded country made pistols, while the remaining three were armed with knives. They asked Shri Goel, who was present in the drawing room to hand over all the valuables. Shri Goel, grappled with one of the desperadoes but the desperadoes started beating him mercilessly. On seeing this, Kumari Savita, 14 years old daughter of Shri Goel, rushed from the kitchen and caught hold of one of the desperadoes. The desperado threatened her with a knife but she did not leave him. At this stage one of the desperadoes fired at Shri Goel, thereby seriously injuring him and also injuring Savita. The five desperadoes then came out of the house and fanned out in different directions. Kumari Savita, who was badly injured, chased the desperadoes to some distance and cried for help. On this the public gathered and chased the desperadoes. In the meantime, the police reached the spot and followed the desperadoes and apprehended one of them.

Kumari Savita Goel thus displayed exemplary courage and gallantry in the face of armed decoits.

7. 7115305 NAIK RAM KUMAR MISHRA, EME. (*Posthumous*)

(Effective date of the award : 7th April, 1984).

Vehicle Mechanic Naik Ram Kumar Mishra was on annual leave at his home in village Khusrupatti, District Madepur (Seharsa), Bihar. On the night of 7th April, 1984, the decoits attacked his village. Undeterred by the grave danger to his life and knowing fully that he was not armed he immediately rushed to the rescue of his neighbour Saligram Jha. He grappled with two of the dacoits and pinned them down. When other dacoits failed to release them from his grip, another dacoit shot at Naik Ram Kumar Mishra and killed him.

Naik Ram Kumar Mishra thus exhibited conspicuous gallantry and sense of civic duty of a very high order.

8. G/8769 M. DRIVER MECHANICAL EQUIPMENT THAKUR DASS

(Effective date of the award : 10th April, 1984)

Driver Mechanical Equipment Thakur Dass of 166 Formation Cutting Platoon was deployed as dozer operator on formaiton cutting of Road Kaylng-Tato. This road passes through extreme hard-rock areas with steep slopes involving very high vertical cuts. On the 10th April, 1984, during the performance of his duties, Shri Thakur Dass was caught in a slide and was buried under the debris alongwith his machine. At this juncture, despite grave injuries to his person, Shri Thakur Dass did not lose his presence of mind and with cool determination, courage and devotion to duty, he manoeuvered the dozer and extricated it to a safe area away from the slide. In the process, he sustained severe injuries on legs and on left hand & lost normal use of his limbs.

Driver Mechanical Equipment Thakur Dass thus displayed courage professional competence and devotion to duty of a high order.

9. JC-10015 SUBEDAR MOHAN SINGH, ARTILLERY.

(Effective date of the award : 14 May, 1984)

Subedar Mohan Singh was deployed as an Artillery Operator at a defence post, Gorkha Ridge. On the 14th May, 1984, Naik Ram Singh of his unit had his right leg blown off by a mine, when he slipped and fell into the mine field. Naik Ram Singh was lying inside the mine-field and his wound was bleeding profesely. No one was prepared to enter the dangerous minefield. Subedar Mohan Singh volunteered himself and also motivated 3 other Ranks to go with him. He left his party on the outskirts and gallantry proceeded into the minefield. He pulled Naik Ram Singh and carried him on to the rock away from the mines. Later Naik Ram Singh's right foot was amputated but his life was saved.

With complete disregard to his personal safety Subedar Mohan Singh thus displayed courage, initiative and boldness in volunteering to rescue a comrade.

10. JC-74856 SUBEDAR NAIB SINGH MAHAL, PUNJAB.

(Effective date of the award : 6th June, 1984)

Subedar Naib Singh Mahal was Incharge of a patrol on surveilance task on the International Border with Burma. On the 6th June, 1984 his patrol suddently came upon Naga hostile washing his clothes in a 'Nala' and apprehended him. Immediately they encountered a volume of fire from hostiles. Showing skilled combat readiness, he led counter assault and destroyed the hostile camp. In this action six Naga hostiles were killed, one captured with two M-21 (Chinese) Rfles, 61-M-21 lives round and a number of incriminating documents were confiscated. From the confiscated documents information about the formations of the National Socialist Council of Nagaland were obtained, which helped in follow-up action.

Subedar Naib Singh Mahal Singh thus displayed courage, presence of mind, leadership and devotion to duty of a very high order.

11. 4170764 LANCE NAIK RANJIT SINGH, KUMAON. (*Posthumous*)

(Effective date of the award : 6th June, 1984)

On the 6th June, 1984, Lance Naik Ranjit Singh, Kumaon Regiment was ordered to clear extremists from one of the buildings of religious place. This building was heavily fortified and held by highly motivated suicide squades of terrorists. As expected, the Company's advance came under heavy fire from Medium and Light Machine Guns and suffered casualties. Lance Naik Ranjit Singh noticed that one Light Machine Gun firing from the paraped wall to the left of the building was holding back the advance of his party. With a daring initiative, he charged at the machine gun post, killing the extremist gunners on the spot. In the process he was himself hit by a burst from that Light Machine Gun. However, the Company resumed its advance without further casualties. At the end of the encounter the body of this brave soldier was found lying between the bodies of the two extremist gunners.

Lance Naik Ranjit Singh thus, displayed conspicuous gallantry indomitable courage, devotion to duty of a very high order and laid down his life in the highest traditions of the Army.

12. 4064837 RIFLEMAN DEVENDER PRASAD GARHWAL RIFLES. (*Posthumous*)

(Effective date of the ward : 7th June, 1984)

On the night of the 6th/7th June, 1984, a patrol of 8 Other Ranks was searching the houses of some known extremists. Rifleman Devender Prasad, a very sharp and competent shooter was the scout of this search party. As the search of houses progressed, he was amongst the first to enter suspected hideouts with total disregard to his personal safety. On one such occasion the patrol came under automatic fire from the top of a house. Rifleman Devender Prasad through intense extremist fire charged at the main door and broke it open with the intention to reach the roof top to apprehend the extremists. At this juncture an extremist hiding behind the

wall on an adjacent roof-top shot Rifleman Devender Prasad in the back, killing him instantly.

Rifleman Devender Prasad thus displayed conspicuous courage, valour and devotion to duty of an exceptionally high order.

13. Captain Yadvinder Singh Mahiwal (JC-38363), Dogra Regiment.

(Effective date of the award : 9th June, 1984)

On the 9th June, 1984, Captain Yadvinder Singh Mahiwal while commanding a rifle Company of 12 Dogra Regiment got information that some extremists were hiding in a village in his area of operation. He immediately led a search party and as he approached the house of Jagjit Singh, a suspected extremist, he saw two armed men taking position on the windowsill. With cool courage he broke into the house and in a lightning move pounced upon Jagjit, overpowered him and snatched away his weapon. The other extremist jumped out of the window and ran away. With uttar disregard to his personal safety, he immediately chased the extremist. He captured the armed extremist before he could fire. In this action one Chinese Self Loading Rifle, one 7.62 mm Self Loading Rifle, 340 rounds of 7.62 mm, .38 pistol 3 rounds and 22 rounds of .22 pistol were recovered.

Capt. Yadvinder Singh Mahiwal thus displayed gallantry courage and devotion to duty of a very high order.

14. Colonel Ranjit Singh Mavi (JC-126373, Infantry.

(Effective date of the award : 11th June, 1984)

On the 11th June, 1984 Colonel Ranjit Singh Mavi, Colonel Administration of a Mountain Division was detailed by his General officer Commanding, to make an on the spot assessment of the troops morale in the wake of events which had taken place in Punjab. After spending a few hours in that unit Colonel Mavi heard noise of firing, while driving back to Headquarters in the night. He immediately drove back to the unit lines and found that the men had broken open the gates and armed themselves. As he could not find any unit officer he took the courageous initiative of taking charge of the situation. Undaunted by grave and immediate danger to his life, and in the face of wild firing by misguided soldiers, he moved from one company line to the other, and to the unit magazine. By his exemplary qualities of leadership, he was able to prevail over the men and establish his command and control, resulting in their laying down arms by 0700 hrs the next day.

Colonel Ranjit Singh Mavi thus displayed conspicous courage exemplary leadership and devotion to duty of a high order.

15. Captain Arvind Kumar Sinha (JC-40410) Garhwal Rifles.

(Effective date of the award : 12th June, 1984)

Captain Arvind Kumar Sinha, Commander, Kachai in Manipur, was tasked to locate a suspected underground hideout and apprehend the hostiles. He meticulously planned an operation and on the 12th June, 1984, at 0800 hrs, he alongwith a patrol party left for the assigned mission. At 0900 hrs, the patrol approached the village Kachai Thikker through a teachers jungle trail, completely avoiding detection. But when they neared the second house of the village a dog tied in front of the third house started barking vigorously. Captain Sinha being suspicious ran to this door and saw two men escaping through the maize field. He rushed behind them, ordering his men to follow suit.

After an anxious chase, one hostile got stuck in a thorny bush. Captain Sinha pounced upon him, but while doing so, his carbine got stuck in the bush and fell off. A hand to hand scuffle ensued in which at one stage, the hostile managed to pin down the officer and fired at his head. Fortunately, no ammunition was left in the pistol. Desparately the hostile began hammering on the officer's head and blood drained over his face. Unmindful of the injuries sustained by him Captain Sinha did not give in and ultimately overpowered the hostile. But the hostile managed to wriggle out and scanter to the jungle nearby. Captain Sinha fired at his leg and felled him down.

On interrogation the hostile revealed that he had ran away from jail in July 1983 and that his gang was to ambush an Army Convoy in Kachai area. One M 22 sub Machine Gun one M 20 pistol, Rocket Detonators, Hand Grenade and huge quantity of ammunition was recovered from him.

Captain Arvind Kumar Sinha thus displayed conspicuous bravery courage and devotion to duty of a high order.

16. 4169678 Lance Naik Chanchal Singh, Kumaon. (Posthumous)

(Effective date of award : 23rd June, 1984)

On the 23rd June, 1984, Lance Naik Chanchal Singh, while accomplishing an extremely difficult assignment on an observation post at high altitude under adverse climatic conditions, was hit by hostile fire. Despite his injury and unmindful of risk to his life, he presisted on completing him mission and in the process succumbed to the injuries.

Lance Nak Chanchal Sngh, thus, exhibited exemplary courage, determination and devotion to duty of a very high order.

17. 4168823 Paid Acting Naik Ram Maher Singh, Kumaon.

(Effective date of the award : 5th July, 1984)

Paid Acting Naik Ram Maher Singh was deployed in the forward areas in the Northern Sector for maintenance of tele-communication link to some of our forward posts. On the 5th July, 1984, tele-communication link had to be re-established to a forward post a number of times because of repeated damage to the line by heavy hostile fire. On one such occasion, Paid Acting Naik Ram Maher Singh was hit by machine gun burst and was severely wounded. Unmindful of risk to his life and despite injuries, he completed his task of re-establishing the vital tele-communication link.

Paid Acting Naik Ram Maher Singh, thus, exhibited exemplary courage, determination and devotion to duty of a high

18. Second Lieutenant Shailesh Kumar (*Posthumous*) (IC-40855), (Bihar).

(Effective date of the award : 10th July, 1984)

On the 10th July, 1984, Second Lieutenant Shailesh Kumar was ordered to move with 10 other Ranks to assist Captain Rajvi Vatsa in searching out extremists in a Village in Amritsar District. Within ten minutes, he alongwith his detachiment reached the village and climbed the roof top of one of the houses. On reaching the roof top a volley of fire the houses. On reaching the roof top a volley of fire of weaof weapons of all sorts came from the house of the Sarpanch Jathedar Mohan Singh, Second Lieutenant Shailesh Kumar sustained serious injury. Unmindful of the injury, he moved up to the parapet of the roof top and fired a sten burst on Jathedar Mohan Singh, and kept on directing the fire from different directions on the extremists simultaneously taking care to avoid killing of innocent persons. Second Lieutenant Shailesh Kumar succumbed to the injuries in the process of directing the controlled fire.

Second Lieutenant Shailesh Kumar thus displayed conspicous courage, leadership and devotion to duty of a very high order.

19. Captain Prabhjyot Singh Gyani (IC-39361), Dogra Regiment.

(Effective date of the award : 12th July, 1984)

On the 12th July 1984, Captain Prabhjyot Singh Gyani, whose company was deployed very close to the International Border and given the task to flush out extremists from have rural areas, received information that Lakha Singh a notorious smuggler and an extremist was accompanying a marriage party in village Rokhe. He immediately led a patrol to apprehend him. On seeing them, Lakha Singh escaped into the fields. Captain Gyani chased the extremist knowing fully well that Lakha Singh was a hardened criminal and heavily armed. He moved swiftly and using good field craft pounced upon him, snatched his pistol and captured him.

Captain Prabhjyot Singh Gyani thus displayed indomitable courage, devotion to duty in apprehending the extremist at great risk to his life.

20. JC-76942 Subedar Major Lall Bahadur Chhetri, 8 Gorkha Rifles.

(Effective date of the award : 4th August, 1984)

On the 4th August, 1984, Subedar Major Lall Bahadur Chhetri was deputed to accomplish an extremely difficult assignment in the forward areas in the Northern Sector. Despite adverse circumstances, and under hostile fire, he led a patrol very close to the adversary's position and accomplished his task, unmindful of his personal safety.

Subedar Major Lall Bahadur Chhetri thus, exhibited conspicuous courage and dedication to duty of a high order.

21. Captain Jaswant Pratap Singh Jadeja (SS-30575), Army Ordnance Corps.

(Effective date of the award : 13th August, 1984)

On the 13th August, 1984, Captan Jaswant Pratap Singh Jadeja was returning from his home station Norbi to Delhi. While he was waiting for his train at Wankaner Railway Station, he observed two men attacking a Constable of Wankaner Railway Police out-post with a sword and a lathi. He saw the assaulted Constable bleeding profusely and rushed to save him from the assailants. He took the man with the sword in his grip and tried to disarm him. In the meantime the other criminal started giving lathi blows on him. When he tried to catch he stick with one hand, the man with the sword escaped from his grip and started running. He pursued him and when he was about to apprehend him the criminal turned back and swung his sword at him. Captain Jadeja managed to snatch the sword from the criminal who was apprehended wih the help of the public. In the scuffle, he received injury on his left temple and deep cuts on the fingers of his left hand from the sword. The culprit was thereafter arrested.

Captain Jaswant Pratap Singh Jadeja thus , displayed exemplary courage in saving the life of a Constable and apprehending a notorious criminal at great peril to his life.

22. 1543318 Lance Naik Puran Singh, Engineers. *(Posthumous)*

(Effective date of the award : 22nd August, 1984)

On the 22nd August, 1984, Lance Naik Puran Singh went to the house of Lance Naik Balwinder Singh of the Regiment located at Bairagarh (Bhopal) to hand over some documents to the individual. On reaching, he saw Lance Naik Balwinder Singh's house in fire and his wife was shouting for help to save the life of her children who were inside. Unmindful of his own safety, Lance Naik Puran Singh rushed into the house and brought out two children inspite of flames leaping all over. He then came to know that third child, aged five and half years, was still inside. By this time, the house has been completely engulfed in fire. Undaunted, he again went inside, picked up the child and brought him out through the maze of flames. Unfortunately, by this time, Lance Naik Puran Singh's clothes had caught fire and he was burnt badly. But even then, he showed tremendous courage and will power and started running with the boy in his arms, towards the Military Hospital, where he finally collapsed.

Lance Naik Puran Singh, thus displayed conspicuous courage, gallantry and selflessness of the highest order at the cost of his own life.

23. Captain Bahadur Singh Bisht (IC-36840), Gorkha Rifles.

(Effective date of the award: 3rd Sept. 1984)

On the 3rd September, 1984, at about 2300 hours, Captain Bahadur Singh Bisht received reliable information about the likelihood of self-styled Corporal Joseph Anal of the National Socialist Council of Nagaland, a hard core insurgent, making a bid to cross Manipur river near village sherou in the early hours of 4th Sept. 1984. Captain Bisht decided to establish two ambushes, where the river was fordable. He himself took charging of the ambush site through which the insurgent was most likely to move. On the 4th September, 1984, at 0445 hours, self-styled Corporal Joseph Anal walked into the ambush and was immediately challenged by Captain Bisht. The insurgent drew out his pistol and fired three rounds at the officer and tried to get away. Undeterred he gave hot chased and with the help of Havildar Bom Bahadur Bisht, pounced upon the insurgent and overpowered him. A Chinese pistol M-20 and 2 magazines were received from his person.

Captain Bahadur Singh Bisht thus displayed exemplary courage, leadership, and devotion to duty of a high order.

24. Flight Cadet Mohinder Jeet Singh Bains (172220) *Flying (Pilot) under Trainng.*

((Posthumous)

(Effective date of the award : 8th Sept. 1984)

On the 8th Sept. 1984, Flight Cadet Mohinder Jeet Singh Bains, who was undergoing Advance stage training at an Air Force Training Institution, was authorised to fly a Low Level Navigation sortie with a chase pilot. Just after take off, he experienced an engine flame-out. Facing the most critical emergency in a single engine jet aircraft, Flt Cdt Mohinder Jeet Singh Bains, inspite of his very limited experience as a trainee pilot, was calm. He turned the stricken aircraft away from heavily populated areas to head for a lake in order to avoid loss of lives on the ground and damage to civilians property. Thereafter, following the drills he had been taught, he jettisoned the canopy and put the aircraft smoothly down, wheels up, on the edge of the lake. The aircraft skimmed along the water and slowed down about three hundred meters into the lake, then nosed into settle wings level on the bottom, twenty feet down. Underwater, Flt Cdt Bains unstrapped himself from his seat and his parachute, disconnected his oxygen tube and came out of the cockpit. But immediately he got entangled in the weeds in the lake. Though weighed down by his boots and overalls, he made a tremendous effort and almost reached the surface but the weeds pulled him down. He attempted to remove his boots and by the time he unlaced one, he had suffocated and drawned.

Flight Cadet Mohinder Jeet Singh Bains thus displayed cool courage, presence of mind and a high sense of responsibility.

25. Pilot Officer Radha Krishna Balabhadra (17326-A), Flying (Pilot).

(Effective date of the award : 25th September, 1984)

On the 25th September, 1984, pilot Officer Radha Krishna Balabhadra was authorised to carry out his fourth sortie on MIG aircraft. During the course of the flight at an altitude of 10 Kms., the canopy perspex of the aircraft shattered and as a result raining glass and plastic fragments fell on him. The aircraft was left with only jagged remanants of the canopy on the left side. The tremendous air blast made it extremely difficult and hazardous for the Officer to even open his eyes and look ahead. Simultaneously he also experienced the accompanied shock of explosive decompression. Pilot Officer Balabhadra, with negligible experience on such aircraft exhibiting great alertness, confidence and coolness descended repidly, selecting the Identification on to emergency, and carried out a safe landing having catered for the extra speed and power required due to the damaged state of the aircraft.

Pilot Officer Radha Krishna Balabhadra thus displayed courage, confidence, presence of mind and a high sense of flying skill.

26. Colonel Ram Krishan Bansal (TC-31300). Army Postal Service Corps.

(Effective date of the award : 1st November, 1984)

On the 1st November, 1984, Colonel Ram Krishan Bansal, while proceeding on temporary duty to Calcutta by train, found that violent mobs at Tundla and Shikohabad stations were manhandling and killing members of one community, including army personnel belonging to the community. He patrolled the train and got all the members of the community shifted to First Class and ACC First Class compartments of the train. He himself stood at the door and did not allow any miscreants to enter compartment risking his own life. He also passed instruction to post adequate Police Guards at Subsequent stations to ensure the safety of the people.

Colonel Ram Krishan Bansal displayed initiative, courage, presence of mind and a high sense of public duty.

27. JC-87387 Subedar Sakharam Daji Khot, Maratha Light Infantry.

(Effective date of the award : 1st November, 1984)

On the 1st November 1984, at 1300 hours, on being informed that rioters had collected around Kabadi Bazar and had entered into the houses of a particular community, with criminal intention, small groups of troops were sent to search the houses. Subedar Sakharam Daji Khot entered a house with three other ranks and was immediately confronted with approximately ten armed rioters, who had encircled a whole family belonging to a particular community and were about to kill them. He let out a war cry and jumped on the goondas with complete disregard to his personal safety. One of the goondas opened fire with his pistol which luckily missed Subedar Khot. Emulating his gallantry, his comrades joined him in overpowering the goondas, thereby saving the lives of a family.

Subedar Sakharam Daji Khot thus displayed courage and dedication to duty in apprehending the culprits.

28. 220058 Warrant Officer Harkanwal Krishan Sharma, *Equipment Assistant.*

(Effective date of the award : 1st November, 1984)

On the 1st November, 1984, Warrant Officer Sharma, who was residing in Palam Colony area, which was very badly sheltered by him. Warrant Officer Sharma maintaining calm, munity in his house to save their lives from the rioteers. In doing this, Warrant Officer Sharma risked the lives of his own family members as the rioteers got some hint that the minority comunity members were hiding in his house. They surrounded the house and threatened Warrant Officer Sharma with dire consequences if he did not hand over the people sheltered by him. Warrant Officer Sharma maintaining calm, rried to convince these miscreants that his house did not shelter any body. Not fully satisfied, the rioteers continued to keep watch on his house and his activities. On the night of 2nd November, 1984, Warrant Officer Sharma found an opportunity and evacuated fist batch of six members of one family sheltering in his house. However before the second lot of 6 people could be moved to safety, the rioteers once again surrounded the house. Warrant Officer Sharma, putting his own life at serious risk, argued with the rioteers and did not allow them to enter his house, His house remained surrounded by miscreants for 48 hours and he himself remained outside eeping their attention diverted. After two days, the family of 6 members was evacuated.

Warrant Officer Harkanwal Krishan Sharma thus displayed exemplary courage and presence of mind in extremely adverse circumstances at grave risk to his own life and lives of his family members.

29. JC-110918 Subedar Harendra Singh Negi, Garhwal Rifles.

(Effective date of award : 2nd November, 1984)

On the 2nd November, 1984, Subedar Harendra Singh Negi, 7 Garhwal Rifles, was travelling by Frontier Mail, along with two officers, three Junior Commissioned Officers and two civilians. As the train neared Modinagar, a violent mob started attacking passengers, belonging to a particular community. Subedar Negi, with utter disregard to his personal safety, prevented the mob from entering the coach. Once again when the train neared Jamuna Bridge, Delhi, the mob attacked the members of a community in the coach in which he was travelling. Fearing the worst, he took timely decision of guarding the doors of the coach to prevent entry of the mob. He ordered Naib Subedar Madho Ram to guard one of the doors while he remained at the other door. He shouted that those inside were Army officers and the mob would have to kill him before any member of the particular community was touched. Showing immense courage, he prevented certain death of some of the passengers.

Subedar Harendra Singh Negi thus displayed initiative, courage, presence of mind and very fine example of comraderie in the highest traditions of the Army.

30. JC-130039 Naib Subedar Madhu Ram, Jammu and Kashmir Rifles.

(Effective date of the award : 2nd November, 1984)

On the 1st November, 1984, Naib Subedar Madhu Ram, while proceeding on temporary duty, was travelling by Frontier Mail from Amritsar to Delhi. There were seven passengers belonging to a particular community travelling in the compartment, alongwith him. On the 2nd November, 1984, when the train reached Modinagar, a violent mob attacked the train with stones and iron bars at a number of places. With utter disregard to his personal safety, Naib Subedar Madhu Ram persuaded and interceded with the mob to spare the lives of his co-passengers. At one stage he was trampled by the mob. However, he remained firm and stated that co-passengers were his superiors and country men and that it was he who should be killed first before any harm could be done to them. Thus he managed to evict the mob from the coach. Throughout the journey, he displayed exemplary courage, rose above the call of duty and stood for communal amity.

Naib Subedar Madhu Ram thus displayed exemplary courage and presence of mind in saving the lives of his co-passengers.

31. Captain Ajay Kumar Das (IC-39491), Sikh,

(Effective date of the award : 2nd November, 1984)

Captain Ajay Kumar Das was the post Commander of a post in Mizoram and was given the task of apprehending one of the most notorious groups of insurgents, which had been terrorising the local population and indulging in violent activities. Captain Das obtained reliable intelligence about the group and planned an effective raid to the hideout of the insurgents. On the 6th November, 1984, at 0255 hours, he approached the hideout by boat rowing against the current in a fast flowing river. Captain Das personally led the assault group and was fired at by the insurgents resulting in severe injuries to a member of the patrol. Undeterred and without caring for his personal safety, he returned the fire and directed his men to continue their assault. Suddenly one hostile jumped from the Jhoom hut and tried to make good his escape. Captain Das acted with cool courage and considerable presence of mind, chased the hostile and in the face of stiff resistance, apprehended him. The hostile who was injured in the encounter and later succumbed to his injuries was identified as self styled Lieutenant Malswama.

Captain Ajay Kumar Das thus displayed a very high degree of professional competence, exceptional valour, cool courage and devotion to duty of a high order.

32. 3379219 Sepoy Daljit Singh, Sikh,

(Effective date of the award : 6th November, 1984)

Sepoy Daljit Singh was a member of a patrol led by Captain A. K. Das, which was to raid a Jhoom hut near Hatoki post in counter-insurgency area of Mizoram, on the night of 5th/6th November, 1984. When the patrol assaulted the hideout of the insurgents, the hostile sentry opened fire and Sepoy Daljit Singh received multiple gun shot wounds. Inspite of his serious injuries and even having lost one eye, Sepoy Daljit Singh continued his advance alongwith the assault group and fired back on the hostiles. He actively assisted the group in injuring and apprehending one self-styled Lieutenant Malswama and a self-styled private Van Erga. Both the apprehended hostiles later succumbed to their injuries.

Sepoy Daljit Singh thus displayed conspicuous gallantry, courage, and devotion to duty of a very high order.

33. G-155130 Vehicle Mechanic Balbir Singh, (Posthumous)

(Effective date of the award : 12th December, 1984)

Vehicle Mechanic Balbir Singh was associated with snow clearance operations at Khar Jungle Pass at a height of 18380 feet from the beginning of winter season 1984-85 and assigned the job of repairs to the plants, machinery and vehicles deployed at an altitude of 17000 feet and above. On the 12th December, 1984, dozer working at Khardungla top had

become defective and the snow clearance between Glacier Bridge and Kilometre 43 could not be carried out. It was very essential to repair the dozer at Khardungla top and to move it towards Kilometre 43. In addition, two dozers at the site had also to be repaired on top priority so that these could be deployed on snow clearance operation at the earliest. Under continuance snow fall, sub zero temperature and the brinding blizzard, Vehicle Mechanic Balbir Singh worked untiringly and repaired all the dozers by the evening of the 12th December, 1984. While leading the repaired dozers to the site a big snow slide swept the vehicle in which Shri Balbir Singh was travelling down the valley side and he got buried under the snow.

Vehicle Mechanic Balbir Singh thus displayed exemplary courage and devotion to duty in utter disregard of his personal safety in reparing the dozers for road clearance.

34. G/154885H MT Driver Kunjukunju Peethambaran, (Posthumous)

(Effective date of the award : 12th December, 1984)

In December, 1984, G/154885H MT Driver Kunjukunju Peethambaran was deployed on both sides of Khardungla Pass at a height of 18,000 feet and above in Ladakh alongwith his vehicle for carrying the snow clearance parties. The Pass was under heavy snow fall and high velocity winds and snow blizzards was a common occurrence. This job was very risky and required a lot of courage to drive the vehicle across the Pass under such adverse climatic conditions.

On the 12th December, 1984, the road North side of Khardungla Pass was closed due to snow and wind drifts. Certain vital stores/equipment were to be inducted across immediately. Unfortunately both the dozers working on the other side of the Pass had become defective and it was decided to induct additional dozer and a Schmidt Snow Cutter Machine from the Southern side. The party left Khardungla top in the evening of 12th December, 1984, in the vehicle driven by MT driver K. Peethambaran. It was snowing heavily and visibility was restricted to only a few metres. When the vehicle crossed the Glacier Bridge it started slipping and could not negotiate the upward slope. The vehicle was pulled by the dozer. The vehicle had hardly covered 200 metres stretch through the thick lays of snow when a big snow slide from hill-side swept away the vehicle towards the valley side in a few seconds. The vehicle and its occupants including Shri Kunjukunju Peethambaran were buried under the snow. As a result Shri Kunjukunju Peethambaran died.

Shri Kunjukunju Peethambaran thus displayed exemplary courage and dedication to duty in utter disregard to his personal safety.

35. G/134679X Operator Exacavating Machinery Valapu Yogaiah (Posthumous)

(Effective date of the award : 30th December, 1984)

Due to heavy rains on the night of 30th/31st December, 1984, a land slide occured at kilometre 159.9 on National Highway (Jammu-Srinagar). The traffic on the road came to standstill and hundreds of vehicles got stranded on both sides of the slide point. Operator Exacavating Machinery Valapu Yogaiah was detailed with his dozer to clear slide. With his exceptional courage and skill he cleared the road slide against heavy odds of falling boulders under poor visibility. When Shri Valapu Yogaiah was on the site, another fresh slide got activated and a few passenger buses got trapped. Shri Valapu Yogaiah displayed exceptional courage and again started clearing the slide with his dozer. At this moment, a massive boulder came hurtling down the hill and hit him on his head and took the dozer operator alongwith the dozer down the valley. Shri Valapu Yogaiah died on the spot.

Shri Valapu Yogaiah thus displayed exemplary courage and extreme devotion to duty without caring for his personal safety.

36. 9921842 Sepoy Chhewang Thundup, Ladakh Scouts. (Posthumous)

(Effective date of the award : 27th February, 1985)

On the 27th February, 1985, Sepoy Chhewang Thundup, while on duty in the forward areas in Northern Sector, came under heavy hostile fire. Unmindful of risk to his personnel life, he held to his position and returned the hostile fire. In the process he was grievously wounded and laid down his life.

Sepoy Chhewang Thundup thus exhibited exemplary courage, resolute determination and devotion to duty of a very high order.

37. Major Suresh Kumar Gadhok (IC-32130), Artillery. (Posthumous)

(Effective date of the award : 30th August, 1985)

On the 30th August, 1985, Major Suresh Kumar Gadhok, while on a reconnaissance mission in forward areas in the Northern border flew his helicopter in poor visibility and inclement weather. During the flight, the helicopter came under hostile fire grievously wounding the officer. Strapped to his seat, and hit by a machine gun burst, Major Gadhok laid down his life while carrying out an important assignment in guarding the frontier of his mother land.

Major Suresh Kumar Gadhok thus exhibited conspicuous courage, determination and devotion to duty of a very high order.

38. Captain Virander Singh Guleria (IC-31042), Artillery.

(Effective date of the award : 30th August, 1985)

On the 30th August, 1985, Captain Virender Singh Guleria, while on a reconnaissance mission in forward areas in the Northern border, flew his helicopter in poor visibility and inclement weather. During the flight, the helicopter came under hostile fire. The aircraft was severely damaged. Captain Guleria was himself injured and his co-pilot was also grievously injured. Despite the adverse circumstances, he piloted the damaged aircraft to transport his grievously injured co-pilot for immediate medical attendance to the Base Camp.

Captain Virender Singh Guleria thus displayed conspicuous courage, professional skill and devotion to duty of a high order.

S. NILAKANTAN, Dy. Secy. to the President.

CABINET SECRETARIAT

RESOLUTION

New Delhi, the 27th February 1986

No. A-11019/2/86-Ad.I.—The Government have decided to constitute, with immediate effect, the Ocean & Technology Board. The Board shall be responsible for :—

(i) Acting as a focal point for inter-departmental/interministerial coordination in respect of ocean related activities with the objective of establishing an integrated approach for coordinated and efficient development and exploitation of ocean resources;

(ii) Guiding the formulation of integrated programmes for research and technological development in the field of activities relating to the ocean;

(iii) Periodically reviewing, monitoring and evaluating the implementation of various ocean related policies and programmes dealt with by different Ministries/Departments; and

(iv) Evolving appropriate future policy options and long term policies for integrated and fuller exploitation of ocean resources.

2. In carrying out the aforesaid responsibilities and functions the Board may—

(a) identify wrong or incorrect approaches in existing policies, quantify their extent and suggest alternative approaches;

(b) make recommendations to the concerned Ministries/Departments in respect of the policy directions and actual programmes and projects of

priority to be taken up as part of integrated development of activities relating to ocean.

Composition

3. The Board shall comprise the following :—

1.	Secretary Department of Ocean Development	Chairman
2.	Secretary, Department of Science & Technology	Member
3.	Secretary, Ministry of Petroleum & Natural Gas	Member
4.	Director-General, Indian Council of Agricultural Research	Member
5.	Scientific Adviser to Raksha Mantri	Member
6.	Secretary, Department of Mines	Member
7.	Dr. H. N. Siddiqui	Member
8.	Prof. V. S. Raju	Member
9.	Dr. S. Krishnaswami	Member

4. The initial term of the Board will be for a period of three years i.e. upto 31-3-1989.

5. The Board will be located in and serviced by the Department of Ocean Development with a Joint Secretary in the Department functioning as Secretary to the Board.

R. RAJAMANI,
Addl. Secy. to the Cabinet.

ORDER

ORDERED that the Resolution be published in the Gazette of India.

ORDERED also that a copy of the Resolution be communicated to the Ministries/Departments of the Governments and and all others concerned.

ANIL KUMAR, Jt. Secy.

MINISTRY OF LAW AND JUSTICE

(DEPARTMENT OF LEGAL AFFAIRS)

New Delhi, the 17th February 1986

RESOLUTION

No. F.8(14)/82-I.C.—Whereas by Resolution dated 4-7-1985 a Committee was constituted under the Chairmanship of Mr. Justice Baharul Islam, M.P., Rajya Sabha, to recommend for the provision of social security measures to the members of the legal profession, and to submit its Report within a period of six months.

2. And whereas the said period of six months will expire on the 22nd February, 1986.

3. And whereas it has been conveyed to the Government that the Committee would not be able to complete its deliberations and submit the Report within the said period and that the said period may be extended by four months.

Now, therefore, it has been resolved to extend the time for submission of the Report by the said Committee by four months from the aforesaid date.

ORDER

ORDERED that the Resolution be published in the Gazette of India for general information.

J. K. KARTHA, Secy.

MINISTRY OF EXTERNAL AFFAIRS

(HAJ CELL)

New Delhi, the 19th February 1986

RESOLUTION

No. M(Haj)118-1/23/85.—The Government of India have reconstituted the Central Haj Advisory Board for the year 1986-87 with the following membership :

1.	Chairman, Andhra Pradesh State Haj Committee.	Ex-officio
2.	Chairman, Assam State Haj Committee.	Ex-Officio
3.	Chairman, Gujarat State Haj Committee.	-do-
4.	Chairman, Bihar State Haj Committee.	-do-
5.	Chairman, Jammu & Kashmir State Haj Committee.	-do-
6.	Chairman, Madhya Pradesh State Haj Committee.	-do-
7.	Chairman, Delhi State Haj Committee	-do-
8.	Chairman, Uttar Pradesh State Haj Committee.	-do-
9.	Chairman, Tamil Nadu State Haj Committee.	-do-
10.	Chairman, Karnataka State Haj Committee.	-do-
11.	Chairman, West Bengal State Haj Committee.	-do-
12.	Chairman, Haj Committee, Union Territory of Lakshdweep	-do- -do-
13.	Chiarman, Haj Committee, Union Territory of Andaman & Nicobar Islands.	-do-
14.	Chairman, Haj Committee, Union Territory of Pondicherry.	-do-
15.	Chairman, Punjab State Haj Committee.	-do-
16.	Chairman, Rajasthan State Haj Committee.	-do-
17.	Chairman, Kerala State Haj Committee.	-do-
18.	Chairman, Tripura State Haj Committee.	-do-
19.	Dr. Rizwan Harris, Bombay.	
20.	Shri Ahmed Patel, Member of Parliament.	
21.	Prof. Faruqi, Jamia Millia, New Delhi.	
22.	Shri Ibrahim Sulaiman Sait, Member of Parliament.	
23.	Shri Mohd. Amin Khandwani, Chairman, Haj Committee, Bombay.	
24.	Shri Abdul Rahman Khan Nishtar, Ex-Minister Uttar Pradesh.	
25.	Shri Samalee Nabi, MLA, Bihar.	
26.	Shri Sultan Yar Khan, Advocate, Delhi.	
27.	Shri Chand Mohd., Assam.	
28.	Shri M.A. Aziz, Andhra Pradesh.	
29.	Dr. U. Mohammad, Madras.	
30.	Shri P. K. Abdulla, IAS (Retd.), Trivandrum.	
31.	Shahzada Shabbirbhai Saheb Nuruddin, Bombay.	
32.	Maulana Marghoob-ur-Rehman, Mohatamim, Darul-uloom, Deoband, Uttar Pradesh.	
33.	Maulana Mohd. Saleh, Uttar Pradesh.	
34.	Shri Shamim Ahmed, Uttar Pradesh.	
35.	Shri Mohidin Salati, Safakadal, Srinagar.	

2. The Joint Secretary, in charge of the Haj Affairs in the Ministry of External Affairs, shall be the Ex-officio Secretary and convenor of the Board.

3. The Board shall advise the Government of India on matters relating to Haj and Ziarat as hitherto.

ORDER

ORDERED that a copy of this Resolution be communicated to all the Ministries of the Government of India, the President's Secretariat, the Vice President's Secretariat, the Prime Minister's Office, the Cabinet Secretariat, Department of Parliamentary Affairs, Lok Sabha and Rajya Sabha Secretariat, all State Governments, Centrally Administered Areas, the Haj Committee Bombay, all State Haj Committees and M/s Mogul Line Limited, Bombay for information.

ORDERED also that the Resolution be published in the Gazette of India.

ARIF QAMARAIN, Jt. Secy. (Afr./Haj)

MINISTRY OF LABOUR

New Delhi, the 25th February 1986

No. Q-16011/1/86-WE.—In pursuance of Rule 3-A read with Rule 4(ii) of the Rules and Regulations of the Central Board for Workers Education, the Government of India hereby appoint S/Shri K. S. Baidwan, Joint Secretary, Ministry of Information and Broadcasting, R. N. Srivastava, Director, Public Enterprises Centre for Continuing Education, New Delhi and Rai Singh, Director-General and Executive Vice-Chairman of the National Council for Co-operative Training, New Delhi, as co-opted members on the Central Board for Workers Education to represent their Ministry/Institutions for a further period of one year with effect from the 24th October, 1985.

CHITRA CHOPRA, Director

PRINTED BY THE MANAGER, GOVERNMENT OF INDIA PRESS, FARIDABAD
AND PUBLISHED BY THE CONTROLLER OF PUBLICATIONS DELHI, 1986